खण्ड –'अ'

अध्याय — 1 अपठित गद्यांश

स्मरणीय बिन्दु

अपठित गद्यांश वह अंश है, जो पहले से न पढ़ा हो। किसी भी अपठित गद्यांश को पढ़कर उसे समझने की प्रतिभा का विकास करना ही अपठित गद्यांश का लक्ष्य है। अपठित गद्यांश से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- गद्यांश के भावार्थ को भली–भाँति समझने के लिए उसे कम से कम दो बार ज़रूर पढ़ें।
- गद्यांश के उन भागों को रेखांकित करते चलें, जिनमें किसी प्रश्न का उत्तर सम्भव हो।
- शीर्षक देते समय यह ध्यान रखें कि वह गद्यांश के मूल भाव को व्यक्त करने वाला हो।
- गद्यांश में पूछे गए शब्दों के अर्थ प्रसंगानुसार ही लिखें।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश छात्र गद्यांश की ठीक से नहीं पढ़ते फलत: उसके मूल भाव को नहीं समझ पाते।
2. छात्र बिना समझे प्रश्न के उत्तर गद्यांश की भाषा में ही लिख देते हैं जिससे उन्हें पूरे अंक नहीं मिल पाते।
3. एक ही सारगर्भित शीर्षक लिखने के स्थान पर दो–तीन लिख देते हैं जो गलत है।
4. छात्रों को गद्यांश कम से कम दो बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
5. प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में देने चाहिए।
6. शीर्षक एक ही दें तथा वह संक्षिप्त, सारगर्भित व रोचक हो।

अध्याय — 2 अपठित काव्यांश

स्मरणीय बिन्दु

'अपठित काव्यांश' का अभिप्राय ऐसे काव्यांश से है जिसे पहले से न पढ़ा गया हो। 'अपठित काव्यांश को हल करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान रखना आवश्यक है–

- सर्वप्रथम दिए गए काव्यांश को ध्यानपूर्वक दो–तीन बार पढ़ें ताकि काव्यांश का मूल भाव और अर्थ समझ में आ जाए।
- काव्यांश के नीचे दिए गए प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
- सबसे सही विकल्प का ही चयन करना चाहिए।

व्याकरण–खण्ड

अध्याय — 1 शब्द निर्माण : उपसर्ग, प्रत्यय एवं समास

स्मरणीय बिन्दु

शब्द भाषा की स्वतंत्र व सार्थक इकाई है। 'शब्द निर्माण' भाषा की सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। शब्द निर्माण मुख्यत: तीन प्रकार से होता है–

- उपसर्ग द्वारा अर्थात् मूल शब्द के पूर्व शब्दांश जोड़ने से।

  जैसे–दुर् + जन = दुर्जन

  अप + व्यय = अपव्यय

- प्रत्यय द्वारा अर्थात् मूल शब्द के पश्चात् शब्दांश जोड़ने से।

  जैसे—सुख + ई = सुखी

  दया + आलु = दयालु

- समास द्वारा अर्थात् दो अलग-अलग शब्दों के योग से।

  जैसे—रसोई + घर = रसोईघर

  स्नान + गृह = स्नानगृह

1. उपसर्ग

वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के आरम्भ में जुड़कर उसके अर्थ अथवा भाव में परिवर्तन करते हैं, व नए-नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

जैसे— वि + चार = विचार

प्र + कार = प्रकार

अभि + शाप = अभिशाप

बे + चैन = बेचैन

यहाँ वि + प्र + अभि + बे उपसर्ग हैं।

विशेष—

1. उपसर्ग भाषा के सार्थक खण्ड होते हैं।
2. उपसर्ग का प्रयोग शब्दांश के रूप में होता है।
3. उपसर्ग का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं होता।
4. उपसर्ग शब्द के आरम्भ में जुड़कर नवीन शब्द का निर्माण करते हैं।

जैसे—'हार' एक मूल शब्द है जिसमें सामान्यत: दो अर्थ लिए जा सकते हैं—'माला' और 'पराजय' + किन्तु उपसर्गों के योग से 'हार' शब्द से अनेक नए-नए शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे—वि + हार = विहार (भ्रमण)। प्र + प्रहार = हार (हमला)। आ + हार = आहार (भोजन)। उप + हार = उपहार (भेंट)। सम् + हार = संहार (मारना)।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि 'हार' शब्द में वि + प्र + आ + उप + सम् आदि उपसर्गों के प्रयोग से अनेक नवीन शब्दों का निर्माण हुआ है। हिन्दी भाषा में शब्द निर्माण के लिए प्रयोग किए जाने वाले उपसर्ग तीन प्रकार के हैं—1. तत्सम + 2. तद्भव + 3. आगत।

1. तत्सम उपसर्ग—जो उपसर्ग संस्कृत भाषा से अपने मूल रूप में हिन्दी भाषा में आए हैं + उन्हें तत्सम उपसर्ग कहते हैं। जैसे—आ + अव + अति + अधि + अनु + अप + अभि + उप + उत् + दुर् + दुस् + निर् + निस् + नि + परा + परि + प्र + प्रति + वि + सम् + सु + सत् + सम + सह + स्व आदि।

उपसर्ग		मूल शब्द		नवीन शब्द
आ	+	जन्म	=	आजन्म
अव	+	गुण	=	अवगुण
अति	+	अन्त	=	अत्यन्त
अधि	+	वक्ता	=	अधिवक्ता
अनु	+	सरण	=	अनुसरण
प्रति	+	एक	=	प्रत्येक
सह	+	चर	=	सहचर
स्व	+	जन	=	स्वजन

2. तद्भव उपसर्ग (हिन्दी के उपसर्ग)—हिन्दी के उपसर्ग मूलत: संस्कृत (तत्सम) उपसर्गों से ही विकसित हुए हैं। यही हिन्दी उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे—अ + अन + उन + कु + नि + पर + स + सु + अध + भर + चौ।

उपसर्ग		मूल शब्द		नवीन शब्द
अ	+	छूत	=	अछूत
अन	+	गढ़	=	अनगढ़

उन	+	चास	=	उनचास
कु	+	मार्ग	=	कुमार्ग
नि	+	कृष्ट	=	निकृष्ट
पर	+	हित	=	परहित
स	+	फल	=	सफल
सु	+	यश	=	सुयश

उपसर्ग		**मूल शब्द**		**नवीन शब्द**
अध	+	खुला	=	अधखुला
भर	+	पेट	=	भरपेट
चौ	+	पाल	=	चौपाल

3. आगत उपसर्ग (विदेशी)—ये उपसर्ग विदेशी भाषाओं (उर्दू + फारसी) से हिन्दी में आए हैं। जैसे—ब + बा + बे + बद + खुश + ना + ला + गैर + हम + हर + दर + सर + कम। कुछ अंग्रेज़ी भाषा से आए हुए उपसर्ग भी हैं; जैसे—सर,

उपसर्ग		**मूल शब्द**		**नवीन शब्द**
बे	+	कसूर	=	बेकसूर
बा	+	अदब	=	बाअदब
बद	+	तमीज़	=	बदतमीज़
खुश	+	मिजाज़	=	खुशमिजाज़
ना	+	खुश	=	नाखुश
ला	+	वारिस	=	लावारिस
गैर	+	कानूनी	=	गैरकानूनी
हम	+	राह	=	हमराह
हर	+	दम	=	हरदम
सर	+	चार्ज	=	सरचार्ज

2. प्रत्यय

प्रत्यय भाषा के वे सार्थक खण्ड हैं जो शब्द के अंत में जुड़कर नए-नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

जैसे—'अच्छा' शब्द में 'आई' प्रत्यय लगाने पर 'अच्छाई' शब्द बनता है।

'नागपुर' शब्द में 'ई' प्रत्यय लगाने पर 'नागपुरी' शब्द बनता है।

विशेष—

1. प्रत्यय अविकारी शब्द है।
2. प्रत्यय का अपना विशेष अर्थ नहीं होता।
3. प्रत्यय का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता।
4. प्रत्यय शब्द के अंत में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं।

प्रत्यय मूल रूप से दो प्रकार के होते हैं—

1. कृत प्रत्यय—जो प्रत्यय क्रिया के मूल (धातु) रूप के साथ लगकर संज्ञा अथवा विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं; वे 'कृत प्रत्यय' कहलाते हैं।

जैसे— मूल शब्द		**प्रत्यय**		**नवीन शब्द**
दौड़	+	ना	=	दौड़ना
तैर	+	आक	=	तैराक
पठ	+	अनीय	=	पठनीय
पूज	+	आ	=	पूजा
पहन	+	आवा	=	पहनावा

प्रमुख कृत प्रत्यय—अक्कड़ + वैया + क + तव्य + आलु + हार + आकू + इयल + आन + आवट + अनीय + आवा + आहट + आई + आव + औना + आस + आ।

2. तद्धित प्रत्यय—जो प्रत्यय सदैव संज्ञा + सर्वनाम तथा विशेषण के साथ जुड़ते हैं; वे 'तद्धित प्रत्यय' कहलाते हैं।

जैसे— मूल शब्द		**प्रत्यय**		**नवीन शब्द**
गरीब	+	ई	=	गरीबी
कला	+	कार	=	कलाकार
परिवार	+	इक	=	पारिवारिक
नारी	+	त्व	=	नारीत्व
नमक	+	ईन	=	नमकीन

प्रमुख तद्धित प्रत्यय—मान + वान + इक + ईला + ई + आई + आपा + त्व + हारा + एरा + ईय + आन + आस + आहट + आनी + पन + ता + ईन + इया + इन।

उर्दू के प्रत्यय—	**नवीन शब्द**
इश	फरमाइश + आजमाइश
आना	मेहनताना + हर्जाना
कार	पेशकार
दान	पीकदान + पानदान
बान	दरबान + मेहरबान
दार	इज्ज़तदार + चमकदार
बाज़	दगाबाज़ + नशेबाज़ + धोखेबाज़
इम	जालिम
खाना	दौलतखाना + कैदखाना
खोर	सूदखोर + रिश्वतखोर
ईन	रंगीन + शौकीन
आनी	रुहानी + जिस्मानी

उपसर्ग तथा प्रत्यय का एक साथ प्रयोग—

उपसर्ग		**मूल शब्द (प्रकृति)**		**प्रत्यय**		**नवीन शब्द**
अप	+	मान	+	इत	=	अपमानित
अ + वि	+	कार	+	ई	=	अविकारी
उप	+	कार	+	ई	=	उपकारी
उप	+	कार	+	अक	=	उपकारक
उप	+	स्थित	+	इ	=	उपस्थिति
अभि	+	मान	+	ई	=	अभिमानी
अनु	+	मान	+	इत	=	अनुमानित
ला	+	चार	+	ई	=	लाचारी
बद	+	चलन	+	ई	=	बदचलनी
अ	+	समाज	+	इक	=	असामाजिक
प्र	+	बल	+	ता	=	प्रबलता
बे	+	कार	+	ई	=	बेकारी
उपसर्ग		**मूल शब्द (प्रकृति)**		**प्रत्यय**		**नवीन शब्द**
बे	+	चैन	+	ई	=	बेचैनी
खुश	+	नसीब	+	ई	=	खुशनसीबी
बद	+	नाम	+	ई	=	बदनामी
परि	+	पूर्ण	+	ता	=	परिपूर्णता
प्र	+	दर्शन	+	ईय	=	प्रदर्शनीय
दुर्	+	बल	+	ता	=	दुर्बलता

3. समास

दो या दो से अधिक शब्दों के योग से नवीन शब्द बनाने की विधि (क्रिया) को समास कहते हैं। इस विधि से बने शब्दों को समस्त-पद कहते हैं। जब समस्त-पदों को अलग-अलग किया जाता है + तो इस प्रक्रिया को समास-विग्रह कहते हैं।

समास रचना में कभी पूर्व-पद और कभी उत्तर-पद या कभी-कभी दोनों ही पद प्रधान होते हैं + इन दोनों पदों के मेल से बने शब्द समस्त पद कहलाते हैं; जैसे—

पूर्व पद		**उत्तर पद**		**समस्त पद (समास)**	
शिव	+	भक्त	=	शिवभक्त	पूर्व पद प्रधान
जेब	+	खर्च	=	जेबखर्च	उत्तर पद प्रधान
भाई	+	बहिन	=	भाई-बहिन	दोनों पद प्रधान
चतु :	+	भुज	=	चतुर्भुज (विष्णु)	अन्य पद प्रधान

परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों (पदों) के मेल (योग) को समास कहते हैं। इस प्रकार एक स्वतंत्र शब्द की रचना होती है।

उदाहरण—रसोईघर + देशवासी + चौराहा आदि।

हिन्दी में समास के छः भेद होते हैं—

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. द्विगु समास
4. द्वन्द्व समास
5. कर्मधारय समास
6. बहुव्रीहि समास।

1. अव्ययीभाव समास—इस समास में पहला पद अव्यय होता है और यही प्रधान होता है।

समस्त पद		**विग्रह**	**समस्त पद**		**विग्रह**
भरपेट	—	पेट भरकर।	आजीवन	—	जीवनभर (पर्यन्त)।
यथायोग्य	—	योग्यता के अनुसार।	आमरण	—	मरण तक (पर्यन्त)।
प्रतिदिन	—	हर दिन।	बीचोंबीच	—	बीच ही बीच में।
आजन्म	—	जन्मभर (पर्यन्त)	यथाशक्ति	—	शक्ति के अनुसार।

2. तत्पुरुष समास—जिस समास में प्रथम शब्द (पद) गौण तथा द्वितीय पद प्रधान होता है; उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमें कारक चिह्नों का लोप हो जाता है। कारक तथा अन्य आधार पर तत्पुरुष के निम्नलिखित भेद होते हैं—

(i) कर्म तत्पुरुष—'को' परसर्ग (विभक्ति कारक चिह्नों) का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद		**विग्रह**
बसचालक	—	बस को चलाने वाला।
गगनचुंबी	—	गगन को चूमने वाला।
स्वर्गप्राप्त	—	स्वर्ग को प्राप्त।
माखनचोर	—	माखन को चुराने वाला।

(ii) करण तत्पुरुष—इसमें 'से' + 'द्वारा' परसर्ग का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद		**विग्रह**
मदांध	—	मद से अंध।
रेखांकित	—	रेखा द्वारा अंकित।
हस्तलिखित	—	हाथ से लिखित।
कष्टसाध्य	—	कष्ट से साध्य।

(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष—इसमें 'को' और 'के लिए' परसर्ग का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद		**विग्रह**
हथकड़ी	—	हाथ के लिए कड़ी।
परीक्षाभवन	—	परीक्षा के लिए भवन।
हवनसामग्री	—	हवन के लिए सामग्री।
सत्याग्रह	—	सत्य के लिए आग्रह।

(iv) अपादान तत्पुरुष—इसमें 'से' (अलग होने का भाव) का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद		**विग्रह**
पथभ्रष्ट	—	पथ से भ्रष्ट।
ऋणमुक्त	—	ऋण से मुक्त।
जन्मान्ध	—	जन्म से अंधा।
भयभीत	—	भय से भीत।

(v) सम्बन्ध तत्पुरुष—इसमें 'का + की + के' और 'रा + री + रे' परसर्गों का लोप हो जाता है। जैसे—

समस्त पद		**विग्रह**
घुड़दौड़	—	घोड़ों की दौड़।
पूँजीपति	—	पूँजी का पति।
गृहस्वामिनी	—	गृह की स्वामिनी।
प्रजापति	—	प्रजा का पति।

(vi) अधिकरण तत्पुरुष—इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति में/पर का लोप हो जाता है। जैसे—

समस्त पद		**विग्रह**
शरणागत	—	शरण में आगत।
आत्मविश्वास	—	आत्मा पर विश्वास।

समस्त पद		**विग्रह**
जलमग्न	—	जल में मग्न।
नीतिनिपुण	—	नीति में निपुण।

3. द्विगु समास—इस समास का पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है और दूसरा पद उसका विशेष्य होता है। जैसे—

समस्त पद		**विग्रह**	**समस्त पद**		**विग्रह**
चौराहा	—	चार राहों का समाहार/समूह।	त्रिफला	—	तीन फलों का समाहार।
त्रिभुवन	—	तीन भुवनों का समूह।	अष्टाध्यायी	—	आठ अध्यायों का समाहार।
नवग्रह	—	नौ ग्रहों का समाहार।	त्रिकाल	—	तीन कालों का समाहार।
त्रिवेणी	—	तीन वेणियों का समाहार।	सतसई	—	सात सौ दोहों का समाहार।

4. द्वन्द्व समास—इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं + तथा + और + या + अथवा आदि शब्दों का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद		**विग्रह**	**समस्त पद**		**विग्रह**
आय-व्यय	—	आय और व्यय।	ऊँच-नीच	—	ऊँच और नीच।
माता-पिता	—	माता और पिता।	राजा-रंक	—	राजा और रंक।
भीम-अर्जुन	—	भीम और अर्जुन।	दूध-दही	—	दूध और दही।
अन्न-जल	—	अन्न और जल।	खट्टा-मीठा	—	खट्टा और मीठा।

5. कर्मधारय समास—इस समास में विशेषण विशेष्य का सम्बन्ध होता है। इसमें प्रथम (पूर्व) पद गुणवाचक विशेषण होता है। जैसे—

समस्त पद		**विग्रह**	**समस्त पद**		**विग्रह**
महात्मा	—	महान् है जो आत्मा।	नीलगाय	—	नीली है जो गाय।
स्वर्णकमल	—	स्वर्ण का है जो कमल।	नीलगगन	—	नीला है जो गगन (आसमान)।
नीलकमल	—	नीला है जो कमल।	महादेव	—	महान् है जो देव।
पीताम्बर	—	पीला है जो अम्बर।	सज्जन	—	सत् है जो जन।

कर्मधारय समास में पूर्व पद तथा उत्तर पद में उपमेय-उपमान सम्बन्ध भी हो सकता है। जैसे—

समस्त पद	**उपमेय**	**उपमान**
घनश्याम	घन के समान	श्याम
कमलनयन	कमल के समान	नयन
मुखचन्द्र	मुखरूपी	चन्द्र

6. बहुव्रीहि समास—इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता बल्कि समस्त पद किसी अन्य के विशेषण का कार्य करता है और यही तीसरा पद प्रधान होता है।

समस्त पद		विग्रह
दशानन	—	दश हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण
चतुर्भुज	—	चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु
लम्बोदर	—	लम्बा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेश
चक्रपाणि	—	चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके अर्थात् विष्णु
नीलकंठ	—	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव

विशेष—बहुव्रीहि समास में विग्रह करने पर विशेष रूप से 'वाला' + 'वाली' + 'जिसका' + 'जिसकी' + 'जिसके' आदि शब्द पाए जाते हैं अर्थात् विग्रह पद संज्ञा पद का विशेषण रूप हो जाता है।

कर्मधारय समास और बहुव्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय समास में विशेषण और विशेष्य अथवा उपमेय और उपमान का सम्बन्ध होता है जबकि बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है।

समस्त पद		विग्रह
नीलकंठ	—	नीला है जो कंठ (कर्मधारय समास)
नीलकंठ	—	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव (बहुव्रीहि)

समस्त पद		विग्रह
पीताम्बर	—	पीला है जो अम्बर (कर्मधारय)
पीताम्बर	—	पीला है अम्बर जिसका अर्थात् कृष्ण (बहुव्रीहि)

कर्मधारय समास और द्विगु समास में अन्तर

कर्मधारय समास में समस्तपद का एक पद गुणवाचक विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है जबकि द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है।

समस्त पद		विग्रह
नीलाम्बर	—	नीला है जो अम्बर (कर्मधारय समास)
पंचवटी	—	पाँच वटों का समाहार (द्विगु)

द्विगु समास और बहुव्रीहि समास में अन्तर

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है जबकि बहुव्रीहि समास में पूरा पद ही विशेषण का काम करता है।

समस्त पद		विग्रह
त्रिनेत्र	—	तीन नेत्रों का समूह (द्विगु समास)
त्रिनेत्र	—	तीन नेत्र हैं जिसके अर्थात् शिव (बहुव्रीहि)।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी शब्द से मूल शब्द व उपसर्ग के विकल्प को चुनने में त्रुटि करते हैं।
2. अधिकांश विद्यार्थी उपसर्ग व प्रत्यय के मध्य भ्रमित रहते हैंए जिससे वे सही विकल्प चुनने में असमंजस में पड़ जाते हैं।
3. समास का विग्रह करते समय विद्यार्थी सामासिक पद का विकल्प ठीक प्रकार से चयन नहीं कर पाते तथा अनुमान से ही विकल्प चुन लेते हैं। वे कर्मधारय व बहुव्रीहि समास का अन्तर नहीं समझ पाते।
4. विद्यार्थियों को उपसर्ग व प्रत्यय का अभ्यास करते रहना चाहिए। जिससे वे सही विकल्प चुन सकें।
5. विद्यार्थियों को यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक शब्द में उपसर्ग नहीं होता।
6. विद्यार्थियों को समास का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते रहना चाहिए तथा कर्मधारय व बहुव्रीहि समास का पर्याप्त अध्ययन करना चाहिए, जिससे विकल्प चुनने में त्रुटियाँ न हों।

अध्याय — 2 अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद

स्मरणीय बिन्दु

वाक्य भेद—वाक्य द्वारा कोई विचार पूर्ण रूप से व्यक्त हो जाता है, अत: किसी भाव या विचार को पूर्ण रूप से व्यक्त करने वाले सार्थक शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं।

वाक्य के दो अंग हैं—

(क) उद्देश्य—वाक्य का वह अंग जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, वह उद्देश्य कहलाता है।

(ख) विधेय—वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, वह विधेय कहलाता है।

जैसे—

उद्देश्य	विधेय
सुरेश	शिक्षक है
बच्चे	मैदान में खेलं रहे हैं।

वाक्य के भेद दो आधार पर किए जाते हैं—

(I) अर्थ के आधार पर वाक्य भेद, **(II)** रचना के आधार पर वाक्य भेद।

टिप्पणी—आपके पाठ्यक्रम में केवल अर्थ के आधार पर वाक्य भेद हैं।

(I) अर्थ के आधार पर वाक्य भेद—इस दृष्टि से वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—

(1) विधानार्थक/विधानवाचक वाक्य—ऐसा वाक्य जिससे किसी कार्य के करने या होने का बोध हो; जैसे —

(अ) राघव चला गया। **(ब)** उसकी माँ बीमार थी।

(स) सूर्य पूर्व से उदय हो रहा है।

(2) निषेधार्थक वाक्य—जिस वाक्य से किसी कार्य के निषेध (न होने) का बोध होता है; जैसे—

(अ) मीरा पढ़ती नहीं है। **(ब)** माताजी आज घर पर नहीं हैं।

(3) प्रश्नार्थक वाक्य—जिस वाक्य में कोई प्रश्न या बात पूछी जाए; जैसे—

(अ) आज राधा क्यों आई थी? **(ब)** आज आप कौन-सा कार्य करेंगे?

(4) शर्तबोधक या संकेतार्थक वाक्य—जिस वाक्य से किसी शर्त का बोध हो या जिस वाक्य की एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर हो; जैसे—

(अ) वर्षा होती तो फसलें पक जातीं। **(ब)** मुकेश आ जाता तो मैं चला जाता।

(5) संदेहार्थक या संभावनार्थक वाक्य—जिस वाक्य से कार्य के होने में संदेह या संभावना का बोध हो; जैसे—

(अ) शायद मैं आगरा जाऊँ। (संभावना) **(ब)** हो सकता है आज बरसात न हो। (संदेह)

(6) विस्मयार्थक या विस्मयादिबोधक वाक्य—जिस वाक्य से आश्चर्य, हर्ष या शोक आदि व्यक्त हो; जैसे—

(अ) हाय! मैं अब क्या करूँ? (शोक) **(ब)** अहा! ताजमहल कितना सुन्दर है। (विस्मय)

(स) वाह! कितना मधुर गाना सुनाया। (हर्ष)

(7) इच्छाबोधक वाक्य—जिन वाक्यों द्वारा कोई इच्छा, शुभकामना या आशीर्वाद व्यक्त किया जाता है; जैसे—

(अ) भगवान सबका भला करे। **(ब)** दीपावली मंगलमय हो।

(8) आज्ञार्थक वाक्य—जिन वाक्यों से आज्ञा या आदेश का बोध हो; जैसे—

(अ) सभी प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **(ब)** चुपचाप बैठकर पढ़ो।

(II) रचना के आधार पर वाक्य भेद—इस दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(1) साधारण वाक्य, जैसे—सूर्योदय हो रहा है।

(2) संयुक्त वाक्य, जैसे—मैं पढ़ रहा हूँ और दिनेश सो रहा है।

(3) मिश्र वाक्य, जैसे—ये वही सज्जन हैं, जो कल बाज़ार में मिले थे।

वाक्य रूपांतरण

वाक्य के अर्थ में किसी तरह के बदलाव किए बिना उसे एक प्रकार से दूसरे प्रकार के वाक्य में परिवर्तित करना ही वाक्य रूपांतरण कहलाता है।

(i) राम विद्यालय जाता है। **(विधानवाचक वाक्य)**

(ii) राम विद्यालय नहीं जाता है। **(निषेधवाचक वाक्य)**

(iii) क्या राम विद्यालय जाता है? **(प्रश्नवाचक वाक्य)**

(iv) काश! राम विद्यालय जाता। **(इच्छावाचक वाक्य)**

(v) राम विद्यालय जाओ। **(आज्ञावाचक वाक्य)**

(vi) शायद राम विद्यालय जाता है। **(संदेहवाचक वाक्य)**

(vii) अरे! राम विद्यालय जाता है। **(विस्मयादिवाचक वाक्य)**

(viii) राम विद्यालय जाता तो पढ़-लिख कर होशियार बनता। **(संकेत वाचक वाक्य)**

इसी प्रकार वाक्यों का एक प्रकार से दूसरे प्रकार में सहजता से रूपांतरण किया जा सकता है।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी अर्थ के आधार पर वाक्यों के सही भेद नहीं चुन पाते।
2. संकेतवाचक वाक्य व सांकेतिक सर्वनाम में अधिकतर विद्यार्थी भ्रमित होते हैं, जिससे वे सही विकल्प चुनने में असमर्थ रहते हैं।
3. विद्यार्थी आज्ञावाचक वाक्य, इच्छावाचक में प्राय: भेद समझ नहीं पाते हैं, इसलिए वे अनुमान से ही विकल्पों का चयन करते हैं।
4. विद्यार्थियों को नियमित रूप से व्याकरण कार्य एवं वाक्य भेदों का अभ्यास करते रहना चाहिए।
5. वाक्य का भेद चुनते समय जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। जल्दबाज़ी में विकल्प चुनने में त्रुटि हो जाती है और अंक कट जाते हैं।

अध्याय — 3 अलंकार

स्मरणीय बिन्दु

अलंकार— अलंकार का शाब्दिक अर्थ है— आभूषण। जिस प्रकार आभूषण नारी की सुन्दरता बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकार से कविता की शोभा बढ़ती है अर्थात् शब्द तथा अर्थ की जिस विशेषता से काव्य का शृंगार होता है, उसे अलंकार कहते हैं। अलंकार शास्त्र में आचार्य भामह ने इसका विस्तृत वर्णन किया है। वे अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक कहे जाते हैं।

अलंकार के भेद—अलंकार को मुख्यत: दो भागों में बाँटा जाता है— **(i)** शब्दालंकार **(ii)** अर्थालंकार

1. शब्दालंकार—जो अलंकार शब्दों के माध्यम से काव्य को अलंकृत करते हैं, वे शब्दालंकार कहलाते हैं। ये वर्णगत, शब्दगत या वाक्यगत होते हैं।

शब्दालंकार के भेद—शब्दालंकारों के मुख्यत: तीन भेद होते हैं—

(1) अनुप्रास अलंकार, **(2)** यमक अलंकार,

(3) श्लेष अलंकार

(1) अनुप्रास अलंकार—काव्य को सुन्दर बनाने के लिए जहाँ किसी वर्ण की आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

(अ) **म**धुर मृदु **म**ंजुल **म**ुख **म**ुसकान।
'म' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

(ब) **स**ुरुचि **स**ुवास **स**रस अनुरागा।
'स' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

(2) यमक अलंकार—यमक अर्थात् 'युग्म'। जब एक शब्द की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति होती है और अर्थ हर बार भिन्न-भिन्न होते हैं; उसे यमक अलंकार कहते हैं। जैसे—

(अ) **कनक कनक** ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय जग वा पाये बौराय॥
यहाँ 'कनक' शब्द की दो बार आवृत्ति है तथा 'कनक' के दो अर्थ हैं—धतूरा एवं सोना; अत: यहाँ यमक अलंकार है।

(ब) वह बाँसुरी की धुनि **कानि** परे,
कुल **कानि** हियो तजि भाजति है।
यहाँ 'कानि' शब्द की दो बार आवृत्ति है। प्रथम 'कानि' का अर्थ 'कान' तथा दूसरे 'कानि' का अर्थ 'मर्यादा' है, अत: यमक अलंकार है।

(3) श्लेष अलंकार—श्लेष का अर्थ है—चिपका हुआ। जहाँ एक ही शब्द से कई अर्थों का बोध होता है, किन्तु शब्द एक ही बार प्रयुक्त होता है उसे श्लेष अलंकार कहते हैं। जैसे—

(अ) माया महा ठगिनि हम जानी।
तिरगुन फाँस लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।
तिरगुन— (i) रज, सत, तम नामक तीन गुण।
(ii) रस्सी (अर्थात् तीन धागों की संगत), अत: श्लेष अलंकार है।
(ब) जो रहीम गति **दीप** की कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारे लगे, बढ़े अँधेरो होय॥
'दीप' शब्द के दो अर्थ हैं—दीपक तथा संतान।
बारे = जन्म लेने पर (संतान के पक्ष में), जलाने पर दीपक के पक्ष में।
बढ़े = बड़ा होने पर, बुझा देने पर, अत: श्लेष अलंकार है।
अर्थालंकार — अर्थालंकार की निर्भरता शब्द पर न होकर शब्द के अर्थ पर आधारित होती है अर्थात् जब किसी वाक्य का सौन्दर्य उसके अर्थ पर आधारित होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।
अर्थालंकार के भेद—अर्थालंकार के मुख्यत: पाँच भेद होते हैं—
(1) उपमा, (2) रूपक, (3) उत्प्रेक्षा (4) अतिशयोक्ति, (5) मानवीकरण।
(1) उपमा अलंकार—उपमा अर्थात् तुलना या समानता उपमा में उपमेय की तुलना उपमान से गुण, धर्म या क्रिया के आधार पर की जाती है।
(i) उपमेय—वह व्यक्ति या वस्तु जिसकी उपमा दी जाए।
(ii) उपमान—वह प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु जिससे उपमा या तुलना की जाए।
(iii) समानतावाचक शब्द—जैसे, ज्यों, सम, सा, सी आदि।
(iv) समान धर्म—वह शब्द जो उपमेय व उपमान की समानता को व्यक्त करने वाले होते हैं।
उदाहरण—(i) प्रात: नभ था, बहुत नीला शंख जैसे।
यहाँ उपमेय—नभ, उपमान—शंख
समानतावाचक शब्द—जैसे, समान धर्म-नीला
इस पद्यांश में 'नभ' की उपमा 'शंख' से दी जा रही है, अत: उपमा अलंकार है।
(ii) मधुकर सरिस संत, गुन ग्राही।
यहाँ उपमेय—संत, उपमान—मधुकर
समानतावाचक शब्द—सरिस
समान धर्म—गुन ग्राही
संतों के स्वभाव की उपमा मधुकर से दी गई है, अत: उपमा अलंकार है।
(2) रूपक अलंकार—इसमें उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाता है। जैसे—
(i) आए महंत बसंत।
यहाँ बसंत पर महंत का आरोप होने से रूपक अलंकार है।
(ii) बंदौ गुरुपद पदुम परागा।
इस पद्यांश में गुरुपद में पदुम (कमल) का आरोप होने से रूपक अलंकार है।
(3) उत्प्रेक्षा अलंकार—यहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है। इसमें मानो, जानो, जनु, मनु आदि शब्दों का प्रयोग होता है।
उदाहरण— सोहत ओढ़ै पीत पट स्याम सलोने गात।
मनो नीलमनि सैल पर आतप पर्‌यो प्रभात।॥
अर्थात् श्रीकृष्ण के श्यामल शरीर पर पीताम्बर ऐसा लग रहा है मानो नीलम पर्वत पर प्रभात काल की धूप शोभा पा रही हो।
(4) अतिशयोक्ति अलंकार—जब किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाए तो अतिशयोक्ति अलंकार होता है।
उदाहरण—हनुमान की पूँछ में, लग न पाई आग।
लंका सिगरी जरि गई, गए निशाचर भाग॥
इस पद्यांश में हनुमान की पूँछ में आग लगने के पहले ही सारी लंका का जलना और राक्षसों के भाग जाने का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया है, अत: अतिशयोक्ति अलंकार है।
(5) मानवीकरण अलंकार—जहाँ कवि काव्य में जड़ पदार्थों, भाव या प्रकृति को मानवीकृत कर दे, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है, जैसे—
(i) बीती विभावरी जाग री।
अंबर पनघट में डुबो रहीं, ताराघट उषा नागरी।
यहाँ उषा (प्रात:) का मानवीकरण कर दिया गया है। उसे स्त्री रूप में वर्णित किया गया है, अत: मानवीकरण अलंकार है।

(ii) तुम भूल गए क्या मातृ प्रकृति को
तुम जिसके आँगन में खेले-कूदे,
जिसके आँचल में सोए जागे।

यहाँ प्रकृति को माता के रूप में मानवीकृत किया गया है, अत: मानवीकरण अलंकार है।

नोट- बोर्ड परीक्षा-2023 में केवल अनुप्रास, यमक, उपमा, रुपक अलंकार पर ही प्रश्न पूछे जायेंगे।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी अलंकार की परिभाषा व भेदों का अध्ययन भली-भाँति नहीं करते हैं, जिसके कारण वे सही विकल्पों का चयन नहीं कर पाते।
2. विद्यार्थी अधिकतर उपमा और रूपक अलंकार के मध्य भेद करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं, जिससे वे ग़लत विकल्प का चयन कर लेते हैं।
3. अधिकांश विद्यार्थी उपमान व उपमेय को लेकर दुविधाग्रस्त रहते हैं, जिससे भेद चुनते समय वे त्रुटियाँ करके ग़लत विकल्प चुन लेते हैं।
4. विद्यार्थियों को अलंकार व उसके भेदों का पर्याप्त अध्ययन करना चाहिए, जिससे वे सही विकल्पों का चयन कर सकें।
5. काव्य पंक्तियों का अर्थ समझकर ही उनके भेदों के विकल्पों का चयन करना चाहिए।

पाठ्य-पुस्तक क्षितिज भाग-1 व पूरक पाठ्य-पुस्तक कृतिका भाग-1

अध्याय – 1 दो बैलों की कथा

पाठ का सारांश

'दो बैलों की कथा' प्रेमचंद की एक सशक्त एवं भावात्मक कहानी है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने किसानों और पशुओं के भावात्मक संबंधों का प्रभावपूर्ण अंकन किया है। इसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। जानवरों में गधे को सबसे मूर्ख माना जाता है। उसे सीधेपन के कारण यह पदवी दे दी गई। अब गधे का प्रयोग बेवकूफ के अर्थ में किया जाता है, बैल को वह कभी-कभी अड़ियल बनकर मारता भी है, गधे का छोटा भाई माना जाता है।

झूरी के पास दो बैल थे—हीरा और मोती। दोनों डील-डौल में ऊँचे और काम में चौकस थे। दोनों में भाईचारा हो गया था। वे मूक भाषा में एक-दूसरे के मन की बात समझ जाते थे। दोनों साथ-साथ खली-भूसा खाते थे। एक बार झूरी ने अपने बैलों को अपने साले गया के साथ उसके गाँव भेज दिया। बैलों को वहाँ जाना अच्छा नहीं लगा। वे वहाँ से रस्सी तुड़ाकर झूरी के पास लौट आए। झूरी तथा गाँव के लड़कों ने उन बैलों का स्वागत-सत्कार किया। पर झूरी की पत्नी को बैलों का इस प्रकार भाग आना अच्छा नहीं लगा उन्हें खाली भूसा खिलाया गया।

दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और दोनों बैलों को गाड़ी में जोतकर ले गया। वहाँ भी उन्हें सूखा भूसा खाने को दिया गया। बैलों को हल में जोता गया, पर दोनों ने पाँव न उठाए। गया ने उन्हें खूब मारा-पीटा। एक छोटी-सी लड़की ने उन्हें बड़े प्यार से दो रोटियाँ खिलाईं। लड़की को भी उसकी सौतेली माँ मारती-पीटती रहती थी। दोनों बैलों के मन में बड़ा असंतोष था। एक दिन छोटी लड़की ने दोनों की रस्सियाँ खोल दीं और वे भाग निकले। रास्ते में उन्हें एक साँड मिला। दोनों उस पर झपट पड़े। साँड बेदम होकर गिर पड़ा। वे भूखे थे, अत: एक मटर के खेत में घुस गए। खेत वाले ने उन्हें पकड़ लिया और कांजीहौस में बंद करवा दिया। भूख से वे बेहाल हो गए। हीरा ने बाड़े की दीवार की मिट्टी को गिरा दिया। चौकीदार ने उसे मोटी रस्सी से बाँध दिया। फिर मोती ने दीवार को धक्का मारा तो आधी दीवार ही गिर गयी। दीवार के गिरते ही घोड़ियाँ और बकरियाँ भाग निकलीं। हीरा की रस्सी नहीं टूटी और उसका साथ देने के लिए मोती भी नहीं भागा। सुबह उनकी खूब मरम्मत हुई।

दोनों बैल वहाँ एक सप्ताह तक भूखे-प्यासे बँधे पड़े रहे। वे मरे हुए बैल प्रतीत होते थे। नीलामी में एक दढ़ियल आदमी ने उन्हें खरीद लिया। उनकी चाल धीमी थी, अत: वह आदमी उन पर जोर से डंडा जमा देता था। बैलों को वह रास्ता जाना-पहचाना सा लगा। दोनों झूरी के घर आकर खड़े हो गए। झूरी ने उन्हें गले से लगा लिया। तभी वह दढ़ियल आ पहुँचा और बैलों पर अपना हक जताने लगा। मोती ने उस पर अपना सींग चलाया। वह गालियाँ बकता हुआ वहाँ से चला गया। झूरी के घर में उन दोनों बैलों को खली, भूसा, चोकर और दाना खाने को मिला। अब चारों ओर खुशी का वातावरण था। मालकिन ने भी उनके माथे चूम लिए।

शब्दार्थ

निरापद—सुरक्षित; **सहिष्णुता**—सहनशीलता; **पछाईं**—पालतू पशुओं की एक नस्ल; **गोईं**—जोड़ी; **कुलेल**—क्रीड़ा **विषाद**—उदासी; **पराकाष्ठा**—अंतिम सीमा; **गण्य**—गणनीय, सम्मानित; **विग्रह**—अलगाव; **पगहिया**—पशु बाँधने की रस्सी **गराँव**—फुँदेदार रस्सी जो बैल आदि के गले में पहनाई जाती है।; **प्रतिवाद**—विरोध; **टिटकार**—मुँह से निकलने वाला टिक-टिक का शब्द; **मसलहत**—हितकर, उचित; **रगेदना**—खदेड़ना; **मल्लयुद्ध**—कुश्ती; **साबिका**—वास्ता, सरोकार; **कांजीहौस (काइन हाउस)**—मवेशीखाना, वह बाड़ा जिसमें दूसरे का खेत आदि खाने वाले या लावारिस चौपाये बंद किए जाते हैं और कुछ दंड लेकर छोड़े या नीलाम किए जाते हैं।; **रेवड़**—पशुओं का झुंड; **उन्मत्त**—मतवाला; **थान**—पशुओं के बाँधे जाने की जगह; **उछाह**—उत्सव, आनंद; **आरजू**—विनती; **मिसाल**—उदाहरण; **ताकीद**—चेतावनी; **पागुर करना**—जुगाली करना; **बरकत**—फायदा।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी ग्रामीण संस्कृति से अनभिज्ञ होने के कारण किसान जीवन में पशु और मनुष्य के मध्य सम्बन्धों को स्पष्ट रूप से समझने में असमर्थ रहते हैं।
2. विद्यार्थी बैलों के माध्यम से उभारे गए नैतिक मूल्यों को समझने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
3. गधों और सज्जनों में समानता जैसे प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ रहते हैं।
4. विद्यार्थियों को पाठ का अध्ययन ध्यानपूर्वक करना चाहिए, जिससे वे ग्रामीण संस्कृति व किसान जीवन में पशु और मनुष्य के मध्य सम्बन्ध को समझ सकें।
5. विद्यार्थियों को पाठ के मूलभाव को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए।
6. गाँवों में वर्तमान समय में पशुओं के महत्त्व के संदर्भ में कक्षा में अध्यापक से समझना चाहिए।
7. वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ नहीं करनी चाहिए।

अध्याय — 2 ल्हासा की ओर

—राहुल सांकृत्यायन

पाठ का सारांश

यह लेख राहुल जी की पहली तिब्बत यात्रा का एक अंश है। जब वे नेपाल के रास्ते से सन् 1929-30 में तिब्बत गए थे। इस लेख में राहुल जी ने तिब्बत की राजधानी ल्हासा की ओर जाने वाले कठिन रास्तों का यथार्थ वर्णन किया है। इस लेख से तिब्बती समाज के रीति-रिवाज़ तथा सामाजिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

नेपाल से तिब्बत जाने का सीधा रास्ता है। पहले फरी-कलिङ्पोङ् का रास्ता बन्द था तब नेपाली हिन्दुस्तानी वस्तुएँ इसी रास्ते से तिब्बत पहुँचती थीं। व्यापारिक एवं सैनिक रास्ता होने के कारण इसमें बीच-बीच में चौकियाँ एवं किले बने हैं जिनमें कभी चीनी फ़ौज रहा करती थीं। बाद में इन फ़ौजी मकानों के गिरने के कारण किसानों ने वहाँ अपने बसेरे बना लिए हैं और आबादी मिलती है। एक ऐसे ही चीनी किले के पास पहुँचकर लेखक और उनके मित्र चाय पीने रुके। तिब्बत में जात-पाँत तथा छुआ-छूत नहीं है तथा औरतें परदा नहीं करतीं। भिखारियों को लोग घरों में नहीं घुसने देते, क्योंकि चोरी का भय होता है, यद्यपि वे सीधे ही घर में घुस आते हैं। अपरिचित भी घर की सास या बहू से चाय बनवाकर पी सकता है। वहाँ से जब वे आगे बढ़े तो एक आदमी राहदारी माँगने आया। लेखक ने उसे दोनों चिट दे दीं और वे उसी दिन थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गए। यहाँ भी सुमति की जान पहचान के लोग रहते थे और भिखमंगे के भेष में होते हुए भी ठहरने के लिए उन्हें अच्छी जगह मिल गई। उन्हें याद आया कि हम पाँच साल पहले भी इसी रास्ते से लौटे थे। एक सज्जन आदमी के रूप में घोड़े पर सवार होकर, परन्तु उस समय किसी ने भी उन्हें ठहरने के लिए जगह नहीं दी थी। तब वे लोग गाँव के एक सबसे गरीब के झोंपड़े में ठहरे थे। लोग वहाँ शाम को छंग पीकर होश-हवास खो बैठते हैं।

अब उन्हें सबसे खतरनाक डाँडा-थोङ्ला पार करना था जो तिब्बत की सबसे खतरे की जगह है। सोलह-सत्रह हजार फुट की ऊँचाई होने के कारण वहाँ कोई गाँव नहीं है। नदियों तथा पहाड़ों के घुमाव के कारण मीलों तक आदमियों के दर्शन नहीं होते। डाकुओं के लिए यह सबसे अच्छी जगह है। यदि डाकू लोग किसी यात्री को मार देते हैं तो उसके मृत शरीर का भी पता नहीं चलता और न कोई परवाह ही करता है। सरकार भी पुलिस या खुफ़िया पुलिस पर खर्च नहीं करती और गवाह भी नहीं मिलता। डकैत पहले आदमी को मार डालते हैं उसके बाद पैसे छीनते हैं। यहाँ कोई हथियार बंदी का कानून नहीं है इसलिए लोग लाठी की तरह पिस्तौल, बन्दूक लिए स्वतन्त्र घूमते हैं।

वे लोग भी भिखमंगों के भेष में ही निकले, जैसा मौका देखते, रोनी सूरत बनाकर, टोपी उतार लेते और जीभ निकालकर, "कुची-कुची (दया-दया) एक पैसा" कहते भीख माँगने लगते। लेकिन पहाड़ की ऊँची चढ़ाई थी, अगला पड़ाव 16 17 मील दूर था। लेखक ने अपने मित्र सुमति से घोड़े करने के लिए कहा।

दूसरे दिन घोड़ों पर सवार होकर डाँडे के लिए चल दिए और एक स्थान पर चाय पीकर दोपहर को पहुँच गए जो समुद्र तल से 17 18 हजार फीट ऊँची थी। जहाँ पूरब से पश्चिम तक हिमालय की चोटी बर्फ़ से ढकी चली गई थी। भीटें की ओर पहाड़ बिलकुल नंगे थे। उत्तर की ओर बर्फ़ वाली चोटियाँ फैली हुई थीं। सबसे ऊँचे स्थान पर डाँडे के देवता का स्थान था जो पत्थरों के ढेर, जानवरों के सीगों और रंगबिरंगे कपड़े की झण्डियों से सजाया गया था। अब उन्हें ढलान पर चलना था। लेखक का घोड़ा धीरे-धीरे चल रहा था। थकावट के कारण उसकी चाल धीमी थी और घोड़ा धीरे-धीरे काफी पिछड़ गया। यह भी जान नहीं पड़ रहा था कि घोड़ा आगे बढ़ रहा है या पीछे लौट रहा है। एक जगह दो रास्ते जा रहे थे। लेखक का घोड़ा बाँऐ रास्ते पर एक-डेढ़ मील चला गया और पूछने पर मालूम हुआ कि लङ्कोर का रास्ता पीछे रह गया, लौटकर उसी रास्ते पर आना पड़ा। सुमति पहले ही पहुँच गया था, वह पूरे गुस्से में था। वह बोला मैंने दो टोकरी कंडे फूँक डाले, तीन-तीन बार चाय को गर्म किया। लेखक ने बहुत नम्रता से कहा—मेरी गलती नहीं घोड़ा बहुत धीमी गति से चल रहा था। मैं तो रात तक पहुँचने की उम्मीद में था, यह सुनकर सुमति जल्दी ठण्डा हो गया।

अब वे तिङ्री के विशाल मैदान में थे जो पहाड़ों से घिरे टापू जैसा था। उस पहाड़ी को तिङ्री (समाधिगिरि) कहते हैं। वहाँ आस-पास के गाँवों में सुमति के बहुत यजमान थे। जो कपड़ा वह बोध गया से लाया था उसकी पतली-पतली लाल रंग की चिरी बत्तियों के गण्डे बनाने में व्यस्त हो गए। वे अब अपने यजमानों के पास जाना चाहते थे। लेखक ने सोचा कि सुमति तो एक हफ्ते में वापस आएगा। इसलिए लेखक ने उनसे कहा, इसी गाँव में गण्डे बाँट आओ, नुकसान जो भी होगा मैं ल्हासा पहुँचकर तुम्हारा हिसाब पूरा कर दूँगा। सुमति मान गए और एक विशेष आदमी से मिलने शेकर विहार की ओर चल दिए।

तिब्बत की जमीन छोटे-छोटे जागीरदारों में बँटी है। इन जागीरों का बहुत बड़ा हिस्सा मठों (विहारों) के अधीन है। जागीरदार खुद भी खेती करता है जिसकी देख-रेख वहाँ रहने वाले भिक्षु करते हैं जो जागीर के आदमियों के लिए एक राजा के समान होता है। शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु नम्से बड़े भद्र पुरुष थे। वे लेखक की वेशभूषा का ख्याल न करते हुए बड़े प्रेम से मिले। यहाँ एक भव्य मन्दिर था जिसमें कन्जुर (बुद्ध वचन-अनुवाद) की हस्तलिखित 103 पोथियाँ रखी हुई थीं। एक-एक पोथी 15.15 सेर वजन की होगी। सुमति ने फिर अपने यजमानों के पास जाने का आग्रह किया अब लेखक पुस्तकों में व्यस्त था, अत: वे चले गए। तिङ्री गाँव पास में ही था। उन्होंने अपना-अपना सामान पीठ पर बाँधा और भिक्षु नम्से से विदाई लेकर चल दिए।

शब्दार्थ

थोङ्ला—तिब्बती सीमा का एक स्थान, **कंडे**—गाय-भैंस के गोबर से बने उपले जो ईंधन के काम में आते हैं। **थुक्पा**—सत्तू या चावल के साथ मूली, हड्डी और माँस के साथ पतली लेई की तरह पकाया गया खाद्य-पदार्थ। **चिरी**—फाड़ी हुई। **सुमति**—लेखक को यात्रा के दौरान मिला मंगोल भिक्षु जिसका नाम लोब्ज़ङ् शेख था। इसका अर्थ है-सुमति प्रज्ञ, अत: सुविधा के लिए लेखक ने उसे सुमति नाम से पुकारा है। **दोन्क्विक्स्तो**—स्पेनिश उपन्यासकार सार्वेंतेज (17वीं शताब्दी) के उपन्यास 'डॉन क्विक्ज़ोट' का नायक, जो घोड़े पर चलता था। **परित्यक्त**—छोड़ा हुआ। **राहदारी**—यात्रा करने का कर। **पोथियाँ**—मोटी किताब। **भीटे**—टीले के आकार जैसा ऊँचा स्थान। **सत्तू**—भूने हुए अन्न (जौ, चना) का आटा। **गंडा**—मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ धागा या कपड़ा। **भरिया**—भारवाहक। **दोनों चिटें**—ञेनम् गाँव के पास पुल से नदी पार करने के लिए जोङ्पोन् (मजिस्ट्रेट) के हाथ की लिखी लमयिक् (राहदारी) जो लेखक ने अपने मंगोल दोस्त के माध्यम से प्राप्त की। **ललाट**—माथा। **पलटन**—सेना। **डाँड़ा**—ऊँची जमीन।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी पाठ में कठिन शब्दों का पर्याप्त ज्ञान न होने से प्रश्नों के उत्तर देने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
2. विद्यार्थी गद्य की यात्रा वृतांत शैली से अपरिचित जान पड़ते हैं।
3. विद्यार्थी लेखक के द्वारा भिखमंगे के भेष में यात्रा का कारण नहीं समझ पाते, जिसके कारण वे प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट से नहीं लिखते।
4. विद्यार्थियों को पाठ का अध्ययन व कठिन शब्दों को रेखांकित करके पर्याप्त जानकारी लेनी चाहिए।
5. पाठ को दो-तीन बार अवश्य पढ़ना चाहिए।
6. उत्तर अनुमान से न देकर पहले प्रश्न को भली-भाँति समझकर ही लिखना चाहिए।

अध्याय — 3 उपभोक्तावाद की संस्कृति

— श्यामाचरण दुबे

पाठ का सारांश

'उपभोक्तावाद की संस्कृति' पाठ में श्री श्यामाचरण दुबे जी ने आधुनिक समय में प्रसारित नए-नए विज्ञापनों की चमक-दमक से प्रभावित खरीददारी करने वालों को सचेत करते हुए लिखा है कि वस्तुओं के गुणों को देखकर तथा बाहरी गुणों के दिखावे में आकर कुछ खरीदने की प्रवृत्ति से समाज में दिखावे की संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा तथा सर्वत्र अशान्ति और विषमता फैल जाएगी। लेखक सोचता है कि आज चारों ओर बदलाव नज़र आ रहा है। जीवन जीने के नए-नए ढंग अपनाए जा रहे हैं। सभी लोग सुख-सुविधाओं के जाल में फँसकर उपभोग की नई एवं आधुनिक वस्तुओं के खरीदने के लालच में खून-पसीने की कमाई को खर्च करने में लगे हुए हैं। बाजार विलासिता की सामग्री से भरा पड़ा है जिनकी खूब बिक्री हो रही है। विज्ञापनों के प्रसार-प्रचार से इन वस्तुओं की ओर आकर्षण बढ़ता जा रहा है; जैसे—टूथपेस्ट, दाँतों को मोती जैसा चमकीला बनाता है, मुँह की दुर्गन्ध हटाता है, मसूड़े मज़बूत बनाता है, बबूल या नीम के गुणों से युक्त है आदि विज्ञापन उपभोक्ताओं का मन मोह रहे हैं। इसी प्रकार से टूथ-ब्रुश, माउथ वाश तथा अन्य सौन्दर्य-प्रसाधनों के विज्ञापन खूब आते हैं। साबुन, परफ्यूम, आफ्टर सेव लोशन, कोलोन आदि अनेक सौन्दर्य प्रसाधनों के लुभावने विज्ञापन उपभोक्ता को आकर्षित करके उत्पाद खरीदने को बाध्य कर देते हैं। उच्च वर्ग की महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल तीस-तीस हज़ार से भी अधिक मूल्य के सौन्दर्य प्रसाधनों से भरी रहती है।

इसी प्रकार से परिधान के क्षेत्र में जगह-जगह बुटीक खुल गए हैं जो महँगे एवं नवीनतम फ़ैशन के वस्त्रों से भरे पड़े हैं जहाँ जाकर उपभोक्ता दिग्भ्रमित हो जाता है एवं ठगी का शिकार होता है। अनेक डिजाइनों में एक लाख तक की घड़ियाँ मिलती हैं। अब घरों में म्यूज़िक सिस्टम और कम्प्यूटर रखना फ़ैशन हो गया है। विवाह पाँच सितारा होटल में होते हैं तो बीमारों के लिए पाँच सितारा अस्पताल भी हैं। पढ़ाई के लिए पाँच सितारा विद्यालय तो हैं ही शायद निकट भविष्य में कॉलेज और विश्वविद्यालय भी पाँच सितारा बन जाएँगे। विदेशों में तो मरने से पहले ही अन्तिम संस्कार का प्रबन्ध भी मूल्य अदायगी पर हो जाता है। आपकी कब्र के आस-पास सदा ही हरी घास होगी, मनचाहे फूल होंगे। प्रतिष्ठा प्राप्ति के इस संसार में अनेक रूप हैं चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों। यह एक सूक्ष्म झलक आज के उपभोक्तावादी समाज की है, क्योंकि हमारा समाज विशिष्ट एवं सम्मानित व्यक्तियों का है परन्तु सामान्य-जन भी इसे ललचाई निगाहों से देखकर आकर्षित होते हैं।

लेखक को चिन्ता है कि भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति का इतना फैलाव क्यों हो रहा है? लेखक को लगता है कि आज का उपभोक्तावाद सामंती संस्कृति से ही पैदा हुआ है। इससे हम अपनी सांस्कृतिक पहचान भी खोते जा रहे हैं। हम पश्चिमी देशों की नकल करते हुए बौद्धिक रूप से उनके गुलाम बन रहे हैं। हम आधुनिकता से झूठे मानदण्ड अपनाकर मान-सम्मान प्राप्त करने की अंधी होड़ में अपने रीति-रिवाज़ भूलकर दिखावटी आधुनिकता के मोह रूपी बंधन में जकड़ते जा रहे हैं। हम दिशाहीन होकर भटकते जा रहे हैं अच्छे-बुरे की पहचान से दूर भाग रहे हैं और हमारा समाज भटक गया है जिसके कारण हमारे सीमित साधन व्यर्थ में नष्ट हो रहे हैं तथा हमारे परिश्रम की कमाई भी व्यर्थ ही नष्ट हो रही है। लेखक सोचता है कि हमारी उन्नति आलू के चिप्स खाने तथा बहुविज्ञापित विदेशी शीतल पेयों को पीने से नहीं हो सकती। पीजा, वर्गर को लेखक ने कूड़ा खाद्य माना है। समाज में आज आपसी प्रेम की कमी होती जा रही है। जीवन स्तर में निरंतर उन्नति के कारण समाज के विभिन्न वर्गों में द्वेष बढ़ता जा रहा है। इससे समाज में विषमता और अशान्ति बढ़ रही है और हमारी सांस्कृतिक पहचान नष्ट होती जा रही है। मर्यादाएँ समाप्त हो रही हैं तथा नैतिक पतन हो रहा है। स्वार्थ की भावना बढ़ती जा रही है। समाज भोग प्रधान बनता जा रहा है। गाँधीजी ने कहा था कि—''हम सब ओर से स्वस्थ सांस्कृतिक मूल्य ग्रहण करें परन्तु अपनी पहचान बनाए रखें। यह उपभोक्तावादी संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को ही हिला रही है।'' हमें इस बड़े खतरे से बचने के लिए सोचना चाहिए और देश के भविष्य की सुरक्षा के लिए उपाय खोजने चाहिए।

शब्दार्थ

वर्चस्व—हावी होना, **प्रतिमान**—आदर्श, **उत्पाद**—तैयार माल, **छद्म**—बनावटी, **चमत्कृत**—हैरान, **आक्रोश**—गुस्सा, **अस्मिता**—सांस्कृतिक पहचान, **परमार्थ**—लोक कल्याण, **आकांक्षाएँ**—इच्छाएँ।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर में उपभोक्तावाद को उचित रूप से स्पष्ट नहीं कर पाते।
2. विद्यार्थी संस्कृति को सभ्यता से जोड़ देते हैं।
3. विद्यार्थियों को पाठ का अध्ययन अच्छी तरह करना चाहिए जिससे वे प्रश्नों के उत्तर भली-भाँति लिख सकें।
4. वर्तनी तथा भाषायी त्रुटियों के लिए निरन्तर अभ्यास करते रहना चाहिए।

अध्याय — 4 साँवले सपनों की याद

— जाबिर हुसैन

पाठ का सारांश

'साँवले सपनों की याद' पाठ जाबिर हुसैन द्वारा रचित प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी सालिम अली के जीवन की घटनाओं पर आधारित एक संस्मरण है। लेखक ने सालिम अली की मृत्यु के बाद अपने दु:ख को इस पाठ में कलमबद्ध किया है। इसमें सालिम अली के जीवन, उनकी सादगी तथा लगन का सफ़न्दर चित्रण है। जून 1987 में जब सालिम अली की मृत्यु हुई तब ऐसा लगा मानो सफ़नहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार साँवले सपनों का एक हुजूम मौत की खामोश वादी की ओर अग्रसर है। इस हुजूम में आगे-आगे अपने अंतिम सफ़र पर सालिम अली जा रहे हैं, लेकिन यह सफ़र पिछले तमाम सफ़रों से भिन्न था। भीड़-भाड़ की ज़िंदगी और तनाव के माहौल से मुक्त होकर वे उस वन पक्षी के समान प्रकृति में विलीन होने जा रहे थे जो अपने जीवन का अंतिम गीत गाकर सदा के लिए खामोश हो गया हो, जैसे मौत की गोद में गए हुए पक्षी को कोई अपना जीवन देकर भी जीवित नहीं कर सकता। सालिम अली पक्षियों की मधुर आवाज़ सफ़नकर झूम उठते थे। लेखक कहता है कि न मालूम कृष्ण ने वृदांवन में कब रासलीला रची थी और गोपियों को अपनी शरारतों का निशाना बनाया था। कब माखन भरे भाँड़े फोड़े थे, दूध-छाछ पिया था, कब कुंजों में विश्राम किया था और अपनी बंसी की तान से वृंदावन को संगीतमय कर दिया था। लेकिन आज भी वृंदावन में कृष्ण की बाँसुरी का जादू भरा हुआ है।

लेखक सालिम अली के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताता है कि वह कमज़ोर काया वाला व्यक्ति सौ वर्ष का होने ही वाला था कि कैंसर की बीमारी से चल बसा। वे जीवन के अंतिम क्षणों तक पक्षियों की खोज, हिफ़ाजत एवं सेवा में लगे रहे। उन जैसा 'बर्ड वाचर' शायद ही कोई होगा। वे सदा प्रकृति को हँसती-खेलती रहस्य भरी दुनिया अपने आस-पास देखते थे। उनके इस कार्य में उनकी जीवनसाथी तहमीना ने पूरा साथ निभाया।

सालिम अली ने केरल की साइलेंट वैली को रेगिस्तानी हवा के झोंकों के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह से अनुरोध किया था। चौधरी साहब गाँव की मिट्टी पर पड़ने वाली पानी की पहली बूँद का महत्त्व समझने वाले पहले और आखिरी नेता थे। पर्यावरण के संभावित खतरों का जो चित्र सालिम अली ने उनके सामने रखा उससे प्रधानमंत्री की आँखें नम हो गईं।

आज सालिम अली और चौधरी साहब दोनों ही नहीं हैं। आज सोंधी माटी पर उगी फसलों के बीच नए भारत की नींव रखने वाला कोई नहीं। अब हिमालय और लद्दाख की बर्फ़ीली ज़मीनों पर जीने वाले पक्षियों की वकालत कौन करेगा?

सालिम अली ने 'फॉल ऑफ ए स्पैरो' नाम से अपनी आत्मकथा लिखी थी। डी. एच. लॉरेंस की मृत्यु के बाद लोगों ने उनकी पत्नी फ्रीडा लॉरेंस से अनुरोध किया कि वे अपने पति के बारे में कुछ लिखें तो उसने उत्तर दिया कि छत पर बैठने वाली गौरैया उनके के बारे में मुझसे अधिक जानती है। जटिल प्राणियों के लिए सालिम अली एक पहेली बने रहेंगे। बचपन में उनकी एयरगन से गौरैया घायल होकर गिर गई थी। उसी ने उन्हें जीवनभर के लिए पक्षियों का सेवक बना दिया और वे लॉरेंस की तरह लम्बी दूरबीन लटकाए जगह-जगह पक्षियों की तलाश करते रहे। अपने खोजपूर्ण नतीजे अपनी रचनाओं के द्वारा देते रहे । लेखक की आँखें उनके जाने पर भीग गई हैं।

शब्दार्थ

परिन्दे—पक्षी। **अथाह**—बहुत गहरा। **यायावरी**—घुमक्कड़। **हिफ़ाजत**—सुरक्षा। **हिदायत**—निर्देश। **सफ़राग**—खोज। **हुजूम**—जनसमूह, भीड़। **सौंधी**—सफ़गंधित, मिट्टी पर पानी पड़ने से उठने वाली गंध। **नैसर्गिक**—सहज, स्वाभाविक, प्राकृतिक। **आबशार**—निर्झर, झरना। **शोख**—चंचल। **गढ़ना**—बनाना। **वादी**—घाटी। **पलायन**—दूसरी जगह चले जाना, भागना। **हरारत**—उष्णता या गर्मी। **मिथक**—प्राचीन पुराकथाओं का तत्त्व, जो नवीन स्थितियों में नए अर्थ को वहन करता है। **शती**—सौ वर्ष का समय।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर देते समय जल्दबाज़ी करते हैं और प्रश्नों को ठीक प्रकार से नहीं समझते।
2. 'पर्यावरण बचाने के लिए स्वयं द्वारा किए जा सकने वाले उपाय' जैसे प्रश्नों का उत्तर देने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
3. विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर अनुमान व कल्पना के आधार पर देने में असमर्थ रहते हैं।
4. विद्यार्थियों को प्रश्नों को भली-भाँति समझकर ही उनके उत्तर लिखने चाहिए। उत्तर देते समय जल्दबाजी नहीं दिखानी चाहिए।
5. पाठ की विषय-वस्तु को समझने का प्रयास करना चाहिए।
6. वाक्य विन्यास व भाषायी त्रुटियाँ नहीं करनी चाहिए।

अध्याय — 5 प्रेमचंद के फटे जूते

— प्रेमचंद

पाठ का सारांश

इस व्यंग्यप्रधान लेख में लेखक ने प्रेमचंद के व्यक्तित्व को उभारने का प्रयत्न किया है। प्रेमचंद की पोशाक को आधार मानकर लेखक ने उनके रहन-सहन, सिद्धान्तों पर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की है। लेखक बताता है कि प्रेमचंद अपनी पत्नी के साथ फोटो खिंचवा रहे हैं। वे सिर पर मोटे कपड़े की टोपी, कुर्ता और धोती पहने हुए हैं। कनपटी चपटी है, गालों की हड्डियाँ भी निकल रही हैं परन्तु घनी मूँछों के कारण चेहरा भरा-भरा लगता है। उनके दोनों पैरों में कैनवास के जूते हैं जिनके बंद ठीक तरह नहीं बँधे हैं। उनकी लापरवाही के कारण फीते के दोनों सिरों पर लगी पतरी निकल गई है, अत: छेदों में फीते डालने में बहुत परेशानी होती है। दाहिने पैर का जूता तो ठीक है परन्तु बायें पैर के जूते में बड़ा-सा छेद है जिसमें से अँगुली बाहर निकल आयी है। लेखक की दृष्टि फटे जूते पर ही अटक गई है। वह सोचता है कि फोटो खिंचवाने की अगर यह पोशाक है तो रोज़ पहनने की पोशाक कैसी होगी? नहीं, इस आदमी के पास अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी। इस पर बदलने के लिए अन्य पोशाकें नहीं होंगी परन्तु देखता है कि प्रेमचंद के चेहरे पर कोई शिकन नहीं है, वे बेपरवाह हैं। उन्हें अपनी पोशाक पर विश्वास है। फोटोग्राफर ने 'रेडी प्लीज' कहा तो उन्होंने दिखावटी थोड़ी-सी मुस्कान चेहरे पर लाने की कोशिश की होगी। लेकिन दर्द भरे दिल से मुस्कान निकली भी नहीं कि 'क्लिक' करके फोटोग्राफर ने 'थैंक यू' कह दिया होगा। लेखक कहता है कि फोटो ही खिंचवाना था तो ठीक जूते पहन लेते। यह कैसी 'ट्रेजडी' है कि आदमी के पास फोटो खिंचवाने के लिए भी जूते नहीं है। लेखक प्रेमचंद से प्रश्न कर रहा है कि तुम फोटो का महत्त्व नहीं समझते? किसी से फोटो खिंचवाने के लिए जूते माँग लेते, लोग तो कोट माँग कर वर-दिखाई करते हैं और मोटर माँगकर बारात में जाते हैं। फोटो खिंचवाने के लिए तो बीवी तक माँग लेते हैं। फिर तुमने जूते भी नहीं माँगे। लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचवाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए। गन्दे से गन्दे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है।

टोपी आठ आने में मिल जाती है। जूते भी पाँच रुपये में मिल जाते होंगे क्योंकि जूता, टोपी से महँगा है। एक जूते के बदले पच्चीसों टोपियाँ आ सकती हैं। तुम महान् कथाकार, उपन्यास सम्राट, युगप्रवर्तक जाने क्या-क्या कहे जाते हो मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है।

लेखक बताता है कि मेरा भी जूता अच्छा तो नहीं है केवल ऊपर से ही लगता है, परन्तु नीचे का तला फटा हुआ है। नीचे से फटे होने के कारण कोई देख नहीं पाता है और किसी को पता भी नहीं चलता।

प्रेमचंद की मुस्कान लेखक को चुभती है। लेखक सोचता है कि यह मुस्कान 'होरी का गोदान' या 'पूस की रात' में नील गाय हल्कू का खेत चर गई या डॉक्टर के न आने से सुजान भगत का लड़का मर गया, की नहीं हो सकती। लेखक को लगता है कि जब माधो औरत के कफन के चंदे से शराब पी गया था तो यह उस समय की मुस्कान है।

लेखक फिर सोचता है कि बनिए के तकादे से बचने के लिए चक्कर लगाकर घर लौटने के कारण इनके जूते फट गये होंगे। कुंभनदास के जूते भी फ़तेहपुर सीकरी के चक्कर लगाते-लगाते घिस गये थे जैसा कि कहा है—'आवत जात पन्हैया घिस गईं बिसर गयो हरि नाम'! जूता चलने से नीचे से घिस जाता है फटता नहीं। लेखक सोचता है कि प्रेमचंद ने किसी कठोर चीज़ को ठोकर मारी होगी जिससे उनका जूता फट गया होगा। वे उससे बचकर भी निकल सकते थे। लेकिन प्रेमचंद समझौतावादी नहीं थे। प्रेमचंद ने जूता फाड़कर अँगुली बाहर निकाल ली है लेकिन पाँव सुरक्षित है। लेखक के तलवे घिस रहे हैं उनका धीरे-धीरे पैर भी घिस जाएगा, फिर वे कैसे चलेंगे।

लेखक प्रेमचंद के फटे जूते और अँगुली के इशारे को समझ रहा है और उनकी व्यंग्य-भरी मुस्कान का अर्थ भी जानता है।

शब्दार्थ

युग प्रवर्तक—युग को आरम्भ करने वाला। **नेम-धरम/नियम और धर्म (कर्त्तव्य)**—नियम पालन को अपना कर्त्तव्य मानना। **उपहास**—खिल्ली उड़ाना, मज़ाक। **आग्रह**—पुन:-पुन: निवेदन करना। **तगादा** —वसूली। **पन्हैया**—देशी जूतियाँ। **बिसरना**—भूल जाना। **क्लेश**—दु:ख। **धरम**—कर्त्तव्य। **बंद**—फ़ीता। **बरकाकर**—बचाकर। **ठाठ**—शान। **पुरखे**—पूर्वज। **बेतरतीब**—बेढंगे। **विडंबना**—दुर्भाग्य। **उपहास करना**—हँसी उड़ाना

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी प्रेमचंद के जूते फ़टे होने की वजह ठीक से नहीं समझ पाते।
2. विद्यार्थी होरी, हलकू, माधो, कुंभनदास आदि से अपरिचित जान पड़ते हैं।
3. विद्यार्थियों को पाठ में निहित व्यंग्य को समझने में कठिनाई होती है।
4. विद्यार्थियों को पाठ का अध्ययन भली प्रकार से करना चाहिए।
5. होरी, हलकू, माधो के बारे में कक्षा में चर्चा करनी चाहिए।
6. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ नहीं करनी चाहिए।

अध्याय — 6 मेरे बचपन के दिन

— महादेवी वर्मा

पाठ का सारांश

'मेरे बचपन के दिन' पाठ में महादेवी वर्मा ने अपने बचपन की यादों पर प्रकाश डाला है। उनके विचार में बचपन की यादें विचित्र आकर्षण से भरी हुई होती हैं। लेखिका अपने परिवार में लगभग दो सौ वर्ष बाद पैदा होने वाली लड़की थी, इसलिए उनके जन्म होने पर सभी को प्रसन्नता हुई। लेखिका के बाबा दुर्गा के भक्त थे तथा उर्दू-फ़ारसी के ज्ञाता थे। इनकी माता जी जबलपुर की थीं जो हिन्दी प्रेमी थीं तथा पूजा-पाठ में विश्वास करती थीं। माता ने ही उन्हें पंचतंत्र पढ़ना सिखाया परन्तु बाबा इनको उर्दू-फ़ारसी पढ़ाना चाहते थे और बाबा ने उर्दू-फ़ारसी पढ़ाने के लिए एक मौलवी साहब की नियुक्ति भी की परन्तु इनकी रुचि उर्दू सीखने में नहीं थी, अत: बहाने बनाकर उर्दू-फ़ारसी से मुख मोड़ लिया। सबसे पहले इनको मिशन स्कूल में पढ़ने के लिए दाखिल किया गया, परन्तु इनका मन वहाँ नहीं लगा। फिर इन्हें क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में कक्षा पाँच में दाखिल कराया। वहाँ का वातावरण इन्हें बहुत अच्छा लगा। छात्रावास के हर कमरे में चार छात्राएँ रहती थीं। उनकी पहली साथिन सुभद्रा कुमारी थीं। वे लेखिका से दो कक्षाएँ आगे थीं। वे कविताएँ लिखती थीं, जो खड़ी बोली में होती थीं। लेखिका भी छुप-छुपकर कविताएँ लिखने लगी और लेखिका की कविताएँ कुछ जान-पहचान वाली छात्राओं में फैल गईं। एक बार सुभद्रा कुमारी ने पूछा, "महादेवी तुम कविता लिखती हो ?" महादेवी ने कहा नहीं। बाद में उन्होंने पीछे से महादेवी जी की डैस्क की किताबों की तलाशी ले डाली और एक अपराधी की तरह उनकी कविताओं को पूरे हॉस्टल में दिखाया कि ये कविता लिखती हैं। इसके बाद दोनों में मित्रता हो गई। कॉलेज में एक पेड़ की नीची डाल पर बैठकर ये दोनों तुकबंदी करती रहती थीं और इनकी कविताएँ 'स्त्री दर्पण' पत्रिका में छप जाती थीं। फिर ये कवि सम्मेलनों में भी जाने लगीं। लेखिका सन् 1917 में यहाँ आई थीं। उस समय गाँधी जी का सत्याग्रह आन्दोलन शुरू हो गया था जिसका केन्द्र आनन्द भवन था। कवि सम्मेलनों की अध्यक्षता हरिऔध, श्रीधर पाठक, रत्नाकर आदि करते थे। लेखिका को लगभग हर बार प्रथम पुरस्कार मिलता था। एक बार कवि सम्मेलन में उनको चाँदी का कटोरा इनाम में मिला। उस दिन सुभद्रा कवि सम्मेलन में नहीं गयी थीं। उन्होंने खुश होकर जब सुभद्रा कुमारी को दिखाया तो सुभद्रा ने कहा कि एक दिन तुम मुझे इसमें खीर बनाकर खिलाओगी।

उसी बीच आनन्द भवन में बापू आए। सब लोग अपने जेब खर्च में से एक-दो आने बचाते थे और बापू के आने पर पैसा उन्हें दे देते थे उस दिन जब महादेवी जी बापू के पास गई तो कटोरा भी साथ ले गईं और उनको पुरस्कार में मिला चाँदी का कटोरा भी दिखाया। गाँधी जी ने कहा कि यह कटोरा मुझे दे दो और लेखिका ने खुश होकर कटोरा गाँधी जी को दे दिया, परन्तु उन्होंने कविता सुनाने के लिये नहीं कहा।

सुभद्रा जी के जाने के बाद लेखिका के साथ एक मराठी लड़की जेबुन्न रहने लगी। वह कोल्हापुर की रहने वाली थी। वह लेखिका के बहुत से काम भी कर देती थी। इस तरह लेखिका को कविता लिखने के लिए अधिक समय मिल जाता था। जेबुन्न मराठी शब्दों से मिली-जुली हिन्दी बोलती थी। लेखिका ने भी कुछ मराठी शब्द सीख लिए। उनकी अध्यापिका जेबुन्न के 'इकड़े-तिकड़े' जैसे मराठी शब्द सुनकर उसे चिढ़ाती कि वाह! देशी कौआ, मराठी बोली। इस पर जेबुन्न कहती यह मराठी कौआ मराठी बोलता है। उसकी वेशभूषा मराठी महिलाओं जैसी थी। वहाँ कोई साम्प्रदायिक भेद-भाव नहीं था। अवध की लड़कियाँ अवधी, बुंदेलखण्ड की बुंदेली बोलती थीं। वहाँ हिन्दी, उर्दू सब विषय पढ़ाए जाते थे पर सब आपस में बातचीत अपनी भाषा में करती थीं।

बचपन में लेखिका का परिवार जवारा के नवाब के घर के पास रहता था उनकी नवाबी छिन गई थी। वे एक बंगले में रहते थे। उसी कम्पाउण्ड में महादेवी जी का परिवार भी रहता था। बेगम साहिबा को वे लोग ताई कहते थे। उनके बच्चे लेखिका की माँ को चचीज़ान कहते थे। इनके जन्मदिन नवाब साहब के घर मनाए जाते थे और उनके बच्चों के जन्मदिन महादेवी जी के यहाँ। उनका एक लड़का था जिसको वे राखी बाँधने को कहती थीं। उसको राखी के दिन सवेरे से पानी भी नहीं देती थीं। कहती थीं राखी के दिन बहनें राखी न बाँध जाएँ तब तक भाई को निराहार रहना चाहिए। इसी तरह मुहर्रम पर हरे कपड़े उनके लिए बनते थे तो इनके भी बनते थे फिर लेखिका के एक छोटा भाई हुआ तो ताई साहिबा ने पिताजी से कहा देवर साहब मेरा नेग ठीक करके रखें। मैं शाम को आऊँगी। वे कपड़े लेकर आईं, वे लेखिका की माँ को दुल्हन कहती थीं। कहने लगीं दुल्हन जिनके ताई-चाची नहीं होतीं वे अपनी माँ के कपड़े पहनते हैं नहीं तो छ: महीने तक चाची-ताई पहनाती हैं। मैं इसके लिए कपड़े लाई हूँ। यह बड़ा सुन्दर है। 'मैं इसका नाम 'मनमोहन' रखती हूँ।

वही प्रोफेसर मनमोहन वर्मा आगे चलकर जम्मू, गोरखपुर, विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे। उनके यहाँ भी हिन्दी-उर्दू चलती थी परन्तु घर में अवधी बोलते थे। उस समय भेदभाव नहीं था। आज की स्थिति देखकर लगता है, जैसे वह सपना ही था। आज वह सपना खो गया। शायद वह सपना सच हो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती।

शब्दार्थ

परमधाम—स्वर्ग। प्रतिष्ठित—सम्मानित। **नक्काशीदार**—बेल-बूटे का काम से युक्त। **निराहार**—बिना कुछ खाए-पिए। **पदक**—(प्रशंसासूचक पुरस्कार) सोने-चाँदी या अन्य धातु से बना हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा जो किसी विशेष अवसर पर पुरस्कार के रूप में दिया जाता है। **प्रभाती**—सवेरे गाया जाने वाला गीत। **लहरिया**—रंग-बिरंगी धारियों वाली विशेष प्रकार की साड़ी जो सामान्यत: तीज, रक्षाबंधन आदि त्यौहारों पर पहनी जाती है। **वाइस चांसलर**—उपकुलपति। **स्मृतियाँ**—यादें। **कंपाउंड** —अहाता। **खातिर**—सत्कार। **नेग**—खुशी के अवसर पर दिया जाने वाला उपहार। **विदुषी**—बुद्धिमती।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर में बचपन के संस्कार से अपरिचित रहते हैं, जिसके कारण वे उत्तर स्पष्ट रूप से नहीं लिख पाते।
2. विद्यार्थी लेखिका की माँ संबंधी विशेषताओं को भली-भाँति समझने में असमर्थ रहते हैं।
3. अधिकांश विद्यार्थी 'लड़का-लड़की एक समान' प्रश्न का सही उत्तर नहीं लिख पाते, अपने अनुमान से ही प्रश्न के उत्तर लिखते हैं।
4. विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर भली-भाँति व स्पष्ट लिखने के लिए पाठ का अध्ययन करना अति आवश्यक है, तभी वे पाठ के सटीक उत्तर लिख पायेंगे।
5. वर्तनी तथा भाषायी त्रुटियों के लिए निरंतर अभ्यास करते रहना चाहिए।

काव्य खण्ड

अध्याय — 1 साखियाँ एवं सबद

— कबीरदास

पाठ का सारांश

भक्तिकाल की निर्गुण, ज्ञानमार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास का विश्वास था कि प्रेम और भक्ति से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने जाति-पाँति, ऊँच-नीच, धनी-निर्धन के भेदभाव एवं संकीर्णता पर व्यंग्य किया। उनकी कविताएँ 'कबीर ग्रंथावली' में संकलित हैं। साखी, सबद, रमैनी कबीर की रचनाएँ हैं। इन सबका संकलन 'बीजक' नाम से उनके शिष्य धर्मदास ने किया था।

कबीर ने सामान्य बोलचाल की भाषा को ही अपनाया। संस्कृत तत्सम, तद्भव शब्दों के साथ अनेक स्थानीय शब्द उनकी रचनाओं में आ गये हैं। पंजाबी, राजस्थानी, ब्रज, पूर्वी भाषाओं के शब्दों में युक्त 'सधुक्कड़ी' भाषा का प्रयोग उन्होंने किया। समाज को एकीकृत करने के लिए आडंबर विहीन मानवतावादी, सर्वमान्य विचारों का प्रतिपादन किया। सबद के माध्यम से वास्तविक ज्ञान की महिमा बताई गई है जो अन्त: चक्षु खोल दे। ईश्वर बाह्य जगत में नहीं वरन् सभी जीवधारियों की साँसों में विद्यमान हैं।

शब्दार्थ

काबा—मुसलमानों का पवित्र तीर्थस्थल। **मोको**—मुझको

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले उपायों में आरती, व्रत, तीर्थयात्री के साथ ही गरीबों की सेवा, माता-पिता की सेवा जैसे उपायों को लिखते हैं जो अनुचित है।
2. विद्यार्थी 'कबीर' को नास्तिक मानते हैं, जो गलत है।
3. विद्यार्थियों को प्रश्न के उत्तर पाठ के आधार पर देने चाहिए न कि सामान्य जानकारी के आधार पर लिखने चाहिए।
4. विद्यार्थियों को कबीरदास के बारे में भली-भाँति ज्ञान होना चाहिए कि वे ईश्वर के नहीं वरन् कर्मकाण्ड के विरोधी थे।

अध्याय — 2 वाख

—ललद्यद

पाठ का सारांश

कश्मीरी भाषा की प्रथम सन्त कवयित्री ललद्यद ने भक्ति के क्षेत्र में व्यापक जनचेतना को जगाने में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने पहले वाख में ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासों की व्यर्थता पर प्रकाश डाला है। अपनी जीवनरूपी नाव को वे साँसों रूपी कच्चे धागे की रस्सी के सहारे खींच रही हैं, पर पता नहीं ईश्वर उसके प्रयास को सफल बनाएगा या नहीं। उसके सारे प्रयत्न असफल सिद्ध हो रहे हैं। वह परमात्मा के घर जाने को इच्छुक है। दूसरे वाख में सांसारिक आडम्बरों का विरोध करते हुए कहा है कि अंत:करण में परमात्मा के सम्भावी होने पर ही मनुष्य की चेतना व्यापक हो सकती है। माया के जाल में मनुष्य को कम से कम फँसना चाहिए। व्यर्थ का खाकर कुछ भी प्राप्त नहीं होगा जबकि कुछ न खाकर व्यर्थ अहंकार बढ़ेगा। जीवन से मुक्ति तभी मिल सकती है जब बन्द द्वार की साँकर खुलेगी। तीसरे वाख में माना गया है कि दुनिया/संसार रूपी सागर से पार जाने के लिए सत्कर्म करने चाहिए। ईश्वर प्राप्ति के लिए अनेक साधक कठिन तपस्या करते हैं परन्तु लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती। चौथे वाख में भेद-भाव का विरोध किया गया है तथा ईश्वर के व्यापक स्वरूप का वर्णन किया गया है परन्तु मनुष्य उसे स्वयं पहचान नहीं पाता।

शब्दार्थ

वाख—वाणी, शब्द या कथन, यह चार पंक्तियों में बद्ध कश्मीरी शैली की गेय रचना है। **कच्चे सकोरे**—स्वाभाविक रूप से कमज़ोर। **रस्सी कच्चे धागे की**—कमज़ोर और नाशवान सहारे। **नाव**—जीवन रूपी नाव। **सम (शाम)**—अंत:करण तथा बाह्य-इंद्रियों का निग्रह। **समभावी**—समानता की भावना। **खुलेगी साँकल बंद द्वार की**—चेतना व्यापक होगी, मन मुक्त होगा। **गई न सीधी राह**—जीवन में सांसारिक छल-छद्मों के रास्ते पर चलती रही। **सुषुम-सेतु**—सुषुम्ना नाड़ी रूपी पुल, हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक नाड़ी (सुषुम्ना), जो नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित है। **जेब टटोली**—आत्मालोचन किया। **कौड़ी न पाई**—कुछ प्राप्त न हुआ। **माझी**—ईश्वर, गुरु, नाविक। **उतराई**—सद्कर्म रूपी मेहनताना **थल-थल**—सर्वत्र। शिव—ईश्वर। **साहिब**—स्वामी, ईश्वर। देव—ईश्वर। **सकोरा**—मिट्टी का प्याला। **व्यर्थ**—बेकार। **साँकल**—कुंडी। **द्वार**—दरवाज़ा। **राह**—रास्ता।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी कठिन शब्दों के अर्थ से परिचित न होने के कारण को नहीं समझ पाते।
2. 'खाकर और न खाकर' का अर्थ खाना खाने से लेते हैं जो गलत है।
3. विद्यार्थी प्राय: परब्रह्म को ब्रह्मा जी समझ लेते हैं जिससे उनके उत्तर भ्रामक हो जाते हैं।
4. विद्यार्थियों को पाठ का मूलभाव व कठिन-शब्दों के अर्थ को भली-भाँति समझकर अध्ययन करना चाहिए।
5. वाख में आए प्रतीकार्थों को समझना चाहिए।

अध्याय — 3 सवैये

— रसखान

पाठ का सारांश

कृष्ण भक्त रसखान श्रीकृष्ण और कृष्णभूमि के प्रति समर्पित थे। उनकी कविताओं में ब्रज के प्रति समर्पण का भाव झलकता है। रसखान कवि कहते हैं कि यदि मैं मनुष्य रूप में जन्म लूँ तो मैं ब्रजक्षेत्र के गोकुल गाँव में ग्वालों के बीच जन्म लूँ। यदि मैं पशु के रूप में जन्म लूँ तो नंद बाबा की गायों के बीच ही चरा करूँ। यदि मैं पत्थर बनूँ तो गोवर्धन पर्वत पर जगह प्राप्त करूँ जिसे श्रीकृष्ण ने इन्द्र का अभिमान नष्ट करने के लिए उठाया था और यदि मैं पक्षी बनूँ तो यमुना के किनारे कदम्ब की डालियों पर ही निवास किया करूँ।

रसखान श्रीकृष्ण के काले कंबल तथा गायों को हाँकने वाली लाठी के बदले तीनों लोकों का राज्य त्यागने के लिए तैयार हैं। आठों सिद्धियों तथा नौ निधियों के सुख को भी नंद बाबा की गायों को चराने के सुख के लिए छोड़ना चाहते हैं। रसखान करील के कुंजों के सुख के लिए स्वर्ण निर्मित करोड़ों महलों के सुख को भी पाना नहीं चाहते।

श्रीकृष्ण की अनुपस्थिति में गोपियाँ उनकी वेशभूषा पहन कर उनका स्वांग धारण करती हैं। सिर पर मोरपंख, गले में गुंजमाला और पीले वस्त्र पहन कर वे गायों के पीछे घूमने की इच्छा प्रकट करती हैं। वे वही सब कुछ करना चाहती हैं जो कृष्ण को प्रिय है परन्तु अपने होठों पर कृष्ण की बाँसुरी रखना पसन्द नहीं करती हैं, क्योंकि वे बाँसुरी को अपनी सौतन समझती हैं और उससे सौतिया डाह रखती हैं परन्तु जब कृष्ण की मोहनी-मुस्कान को देखती हैं तो वे पागल-सी हो जाती हैं और मोह के कारण अपने को सँभाल नहीं पाती हैं।

शब्दार्थ

बसौं—बसना, रहना। **कहा बस**—वश में न होना। **मँझारन**—बीच में। **गिरि**—पहाड़। **पुरंदर**—इंद्र। **कालिंदी**—यमुना। **कामरिया**—कम्बल। **तड़ाग**—तालाब। **कलधौत के धाम**—सोने-चाँदी के महल। **करील**—काँटेदार झाड़ी। **वारौं**—न्योछावर करना। **भावतो**—अच्छा लगना। **अटा**—अटारी, अट्टालिका। **टेरि**—पुकारकर बुलाना। **मानुष**—मनुष्य। **पाहन**—पत्थर। **लकुटी**—लाठी। **कोटिक**—करोड़। **ग्वारन**—ग्वाल। **स्वांग भरौंगी**—वेष धारण करूँगी। **अधरान**—होठों पर। **काननि**—कान में। **मुसकानि**—मुस्कान।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी रसखान के गोकुल में बसने का कारण ठीक प्रकार से नहीं समझ पाते और अनुमान के आधार पर उत्तर लिख देते हैं।
2. छात्र रसखान के सवैयों का मूल भाव नहीं समझ पाते जिससे उनके उत्तर सटीक नहीं होते।
3. विद्यार्थियों को काव्यांश के भाव स्पष्ट करने सम्बन्धी प्रश्नों में अधिक कठिनाई होती है।
4. विद्यार्थियों को सवैयों का कक्षा में अध्ययन कर उनका मूल भाव समझने का प्रयास करना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को भाव स्पष्ट करने सम्बन्धी प्रश्नों का हल करते समय दी गई पंक्तियों को समझ कर अपने शब्दों में उसका भाव स्पष्ट करना चाहिए।

अध्याय — 4 कैदी और कोकिला

— माखनलाल चतुर्वेदी

पाठ का सारांश

यह कविता अंग्रेज़ी शासन के शोषण तंत्र को प्रकट करने तथा उसके विरोध में जनता को उत्साहित करने हेतु लिखी गई थी। भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के साथ अंग्रेज़ शासकों ने क्रूरता का व्यवहार किया तथा उन्होंने भारतीयों को अपने दमन चक्र, कठोर नियमों में पीस डालने की कोशिश की। भारतीयों को तरह-तरह की यातनाएँ दीं। कवि ने जेल में अकेले रहकर उदास जीवन व्यतीत किया तब उन्होंने कोयल से अपने दिल के दु:ख और असंतोष के भाव प्रकट किए हैं। कोयल जब आधी रात में मधुर स्वर में बोलती थी तो कवि को ऐसा प्रतीत होता था कि वह सारे देश को एक कारागार के रूप में देखने लगी है और मधुर गीत गाने के स्थान पर मुक्ति के लिए चीखने लगी। कवि कोकिला से पूछता है कि वह बार-बार क्यों कूकती है? वह किसका संदेश लाई है? देशभक्तों और स्वतन्त्रता सेनानियों को डाकू, चोरों और बदमाशों के लिए बनाई जेलों में बंद कर अंग्रेजों ने उन पर तरह-तरह के अत्याचार ढाए हैं। क्या कोकिला भी स्वयं को कैदी अनुभव करती है? अंग्रेज़ों ने देशभक्तों को हथकड़ियों में जकड़ दिया था। उनसे बलपूर्वक मज़दूरों का कार्य लिया जाता था। कोयल काले रंग की थी तथा विदेशी शासन भी काला था। कवि की काल कोठरी काली थी, टोपी काली थी, कम्बल काला था और पहरेदारों की हुँकार भी काले नागों के समान काली थी। कवि का संसार बस दस फुट की कोठरी ही था जहाँ उसका रोना भी गुनाह था। जेल में बस कष्ट ही कष्ट थे पर फिर भी गाँधी जी के आह्वान पर देश की स्वतंत्रता के लिए कवि और सभी देशभक्त प्रयत्नशील थे।

शब्दार्थ

बटमार—रास्ते में यात्रियों को लूट लेने वाला। **हिमकर**—चंद्रमा। **दावानल**—जंगल की आग। **मोट**—पुर, चरसा (चमड़े का डोल जिससे कुँए आदि से पानी निकाला जाता है।) **जूआ (जुआ)**—बैलों के कंधे पर रखी जाने वाली लकड़ी । **हुँकृति**—हुँकार। **ब्याली**—सर्पिणी। **वेदना**—दु:ख। **मोहन**—मोहनदास करमचंद गाँधी अर्थात् महात्मागाँधी। **मृदुल**—कोमल। **कोकिल**—कोयल। **आली**—सखी। **तम**—अंधेरा। **कमली**—कम्बल। **मोट खींचना**—कोल्हू का चरसा चलाना। रजनी—रात।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी कविता का भली-प्रकार अध्ययन नहीं करते जिससे प्रश्नों के उत्तर देने में उन्हें असुविधा रहती है।
2. 'मोहन के व्रत पर' से आशय वे कृष्ण भगवान के व्रत, पूजा आदि लेते हैं जो कि गलत है।
3. विद्यार्थी कवि के जेल में बंदी होने की वजह स्पष्ट नहीं कर पाते।
4. विद्यार्थियों को कविता का अध्ययन कर उनका केन्द्रीय भाव समझना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में देने का प्रयास करना चाहिए।
6. वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ कम करनी चाहिए।

अध्याय — 5 ग्राम श्री

—सुमित्रानंदन पंत

कविता का सारांश

'ग्राम श्री' शीर्षक कविता में श्री सुमित्रानन्दन पंत ने गाँव की प्राकृतिक सुन्दरता और समृद्धि का मार्मिक चित्रण किया है। गाँव के खेतों में दूर-दूर तक फ़ैली लहलहाती फ़सलें, फ़ल-फ़ूलों से लदी पेड़-पौधों की डालियाँ हैं और गंगा की सतरंगी रेती कवि के मन को प्रफुल्लित कर देती है। खेतों में दूर-दूर तक फैली हरियाली मखमल के समान कोमल प्रतीत होती है जिस पर सूर्य की किरणें चाँदी की जाली के समान बिखरी हुई लगती है। हरी-भरी धरती पर नीले आकाश का पर्दा-सा फैला हुआ मनोरम लगता है। गेहूँ की बालियाँ अरहर और सनई की फलियाँ सोने जैसी किंकणियाँ शोभा दे रही हैं। हरी-हरी धरती पर नीली-नीली तीसी फैली हुई बहुत अनोखी लग रही हैं। मटर और छीमियों पर रंग-बिरंगी तितलियाँ मँड़रा रही हैं। आम की डालियाँ चाँदी सोने जैसी मंजरियों से लद गई हैं। ढाक और पीपल से पत्ते झर रहे हैं। कटहल जामुन, झरबेरी, आड़ू, नीबू, अनार, आलू, गोभी, बैंगन और मूली का सुन्दर दृश्य मन को लुभा रहा है। पीले-पीले अमरूदों पर लाल-लाल चित्तियाँ पड़ गई हैं। पीले बेर पक गये हैं। पालक, धनियाँ, लौकी, टमाटर, सेम, मिर्च, सभी अपनी सुन्दरता बिखेर रहे हैं। गंगा नदी के किनारे रेत पर पानी के बहाव से लहरें सतरंगी साँप-सी प्रतीत हो रही हैं। गंगा के किनारे तरबूज़ों की खेती आकर्षण युक्त है। किनारों पर बगुले पैरों रूपी कंघी से अपने बाल संवार रहे हैं। सर्दियों की धूप फ़ैल गई है। हरियाली अलसाई-सी लग रही है। सारा गाँव मरकत के खुला डिब्बा-सा लग रहा है जिस पर स्वच्छ आकाश रूपी नीलम फ़ैला हुआ है। सर्वत्र सुन्दरता ही सुन्दरता विद्यमान है।

शब्दार्थ

रजत—चाँदी, **स्वर्ण**—सोना, **आम्र**—आम, **तरु**—पेड़, **सरपत**—परछाई, **सुरखाब**—चकवा, **किंकिणियाँ**—बालियाँ, **तैलाक्त**—तेल के जैसी, **तम**—अँधेरा, **आच्छादन**—छाया हुआ।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी कठिन शब्दों के अर्थ से परिचित न होने के कारण प्रश्न को नहीं समझ पाते हैं।
2. 'मरकत डिब्बे सा खुला' का अर्थ मँडराने से लेते हैं जो गलत है।
3. विद्यार्थियों को पाठ का अध्ययन गहनता से करना चाहिए।
4. 'ग्राम श्री' में आए प्रतीकार्थों को समझना चाहिए।

अध्याय — 6 मेघ आए

— सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

पाठ का सारांश

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता 'मेघ आए' प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त कविता है। इसमें कवि ने मेघों की तुलना गाँव में सज-सँवरकर आने वाले दामाद के साथ की है। जिस प्रकार दामाद के आने पर गाँव में प्रसन्नता का वातावरण उत्पन्न हो जाता है उसी प्रकार मेघों के आने पर

धरती पर भी प्राकृतिक उपादान उमंग में झूम उठते हैं। कवि ने प्रकृति का मानवीकरण करते हुए उमंग, उत्साह तथा उपालम्भ आदि भावों को बड़े सजीव ढंग से चित्रमयता के साथ कविता में वर्णित किया है। मेघ रूपी बादलों के आगे-आगे हवा नाचते-गाते हुए बढ़ती है।

गली-मुहल्ले की खिड़कियाँ एक-एक कर खुलने लगती हैं ताकि बने-ठने मेघों को देख सकें। पेड़ झुक-झुक कर गर्दन उचकाकर उसे देखने लगे तो धूल घाघरा उठाकर आँधी के साथ भाग चली। बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर उसका स्वागत किया। गाँव का तालाब पानी भरी परात लेकर प्रसन्नता से भर उठा। जब मेघ बरसने लगे तो धरती और बादलों का आपसी मिलन हो गया।

शब्दार्थ

आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली—वर्षा के आगमन की खुशी में हवा बहने लगी, शहरी मेहमान के आगमन की खबर सारे गाँव में तेज़ी से फैल गई। **बाँकी चितवन**—बाँकपन लिए दृष्टि, तिरछी नज़र। **जुहार करना**—आदर के साथ झुककर नमस्कार करना। **क्षितिज-अटारी गहराई**—अटारी पर पहुँचे अतिथि की भाँति क्षितिज पर बादल छा गए। **दामिनी दमकी**—बिजली चमकी, तन-मन आभा से चमक उठा। **क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की**—बादल नहीं बरसेगा का भ्रम टूट गया, प्रियतम अपनी प्रिया से अब मिलने नहीं आएगा यह भ्रम टूट गया। **बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके**—मेघ झर-झर बरसने लगे, प्रिया-प्रियतम के मिलन से खुशी के आँसू छलक उठे। **दामिनी**—बिजली। **भरम**—भ्रम। **अश्रु**—आँसू। **बयार**—हवा। **हरसाया**—हार्षाना। **अकुलाई**—परेशान होती हुई। **पाहुन**—मेहमान। **मेघ**—बादल।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थी कविता का अध्ययन ध्यानपूर्वक नहीं करते, जिससे वे कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट रूप से नहीं लिख पाते।
2. विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर अपने अनुमान से ही लिखते हैं तथा कविता की पंक्तियों में से सही अलंकार ढूँढ़कर नहीं लिख पाते।
3. वे बादलों के आने पर प्रकृति में गतिशील क्रियाओं का सही रूप से वर्णन नहीं कर पाते।
4. विद्यार्थियों को कविता के मूलभाव का ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए तथा कविता के केन्द्रीय भाव को समझना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में लिखने का प्रयास करना चाहिए।
6. वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ नहीं करनी चाहिए तथा व्याकरण का अभ्यास निरंतर करते रहना चाहिए।

अध्याय — 7 बच्चे काम पर जा रहे हैं

— राजेश जोशी

पाठ का सारांश

आज के भौतिकवादी युग में मानव, मानव से दूर तो हुआ ही है साथ ही उसने बच्चों के बचपन को भी छीन लिया है। सामाजिक और आर्थिक विषमताओं ने बच्चों को खेल-कूद और शिक्षा से दूर कर दिया है। सर्दियों में कोहरे से भरी सड़क पर 'बच्चे सुबह-सवेरे काम पर जा रहे हैं', जो समय की सबसे भयानक बात है। कवि जानना चाहता है कि क्या बच्चों की खेलने की सारी गेंदें अंतरिक्ष में खो गई हैं या दीमकों ने उनकी रंग-बिरंगी किताबों को खा लिया है ? क्या उनके सारे खिलौने नष्ट हो गए हैं ? क्या सारे विद्यालय, बाग-बगीचे, घरों के आँगन अचानक समाप्त हो गए हैं ? यदि बच्चों से उनके बचपन में ही काम लिया जाने लगा तो यह विश्व के लिए बहुत खतरनाक स्थिति होगी।

शब्दार्थ

कोहरा—धुंध। **मदरसा**—विद्यालय। **हस्बमामूल**—यथावत। **भयानक**—डरावनी। **एकाएक**—अचानक। **हमारे समय की**—वर्तमान समय की। **विवरण**—परिचय। **सवाल**—प्रश्न। **किताबें**—पुस्तकें।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी बच्चों के काम पर जाने की गंभीरता को समझने में असमर्थ रहते हैं।
2. विद्यार्थी बच्चों के काम पर जाने की वजह समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं।
3. विद्यार्थी कवि द्वारा 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' को इसे के रूप में पूछे जाने और सामान्य कथन के रूप में कहने के अंतर को नहीं समझ पाते।
4. विद्यार्थियों को कविता में उठायी गई समस्या को समझने हेतु कक्षा में चर्चा करनी चाहिए।
5. मलिन बस्तियों में जाकर, बालश्रमिकों से मिलकर इसकी वास्तविकता का पता लगाना चाहिए।
6. कविता के केन्द्रीय भाव को आत्मसात् करना चाहिए।

कृतिका भाग-1

अध्याय — 1 इस जल प्रलय में

—फणीश्वरनाथ 'रेणु'

पाठ का सारांश

लेखक बताता है कि उसका गाँव एक ऐसे इलाके में है जहाँ हर साल पश्चिम, पूरब और दक्षिण की कोसी, पनार, महानंदा और गंगा की बाढ़ से पीड़ित प्राणी आकर शरण लेते हैं। सावन-भादों में गाय, बैल, भैंस तथा बकरियों के समूह देखकर बाढ़ की विभीषिका का सन्देह हो जाता है।

लेखक बताता है कि पटना शहर में सन् 1967 में बाढ़ आई थी जिसका आँखों देखा वर्णन लेखक 'रेणु' ने किया है, जो एक भयानक घटना थी। लेखक ने अपने गाँव में बाढ़ की विभीषिका को देखा और सुना है लेकिन पटना में आई इस बाढ़ को उसने इस शहर का निवासी होने के नाते भोगा है। लेखक फणीश्वरनाथ रेणु पटना के गोलंबर मुहल्ले में रहते थे।

उस वर्ष पटना में एक बार अठारह घंटे लगातार बारिश हुई। पटना का पश्चिमी इलाका छाती तक पानी में डूब गया। राजेन्द्र नगर, कंकड़बाग तथा निचले इलाके सभी जलमग्न हो गए। लोग अपने-अपने घरों की छतों पर ईंधन, आलू, मोमबत्ती, दियासलाई, सिगरेट, पीने का पानी और कम्पोज़ की गोलियाँ जमाकर बैठ गए और बाढ़ की प्रतीक्षा करने लगे। यहाँ तक कि राजभवन और मुख्यमंत्री निवास भी बाढ़ की चपेट में आ चुके थे। दोपहर को सूचना बाँग्ला भाषा में प्रसारित हुई। गोलघर डूब गेछे। अर्थात् गोलघर भी डूब गया है। बाढ़ का जायजा लेने के लिए तथा कॉफी का मज़ा लेने के लिए लेखक पाँच बजे कॉफी हाउस में अपने कवि मित्र के साथ गया तो रिक्शेवाले ने हँसकर कहा कि अब कहाँ जाइएगा? कॉफी हाउस में तो पानी आ चुका है और वह बन्द है। अपने-अपने साधनों से लोग बाढ़ की स्थिति देखने निकल पड़े थे और तरह-तरह की आशंकाएँ प्रकट कर रहे थे।

पटना के अप्सरा हॉल, पैलेस होटल तथा इंडियन एअर लाइंस के दफ्तर के सामने से जब लेखक जा रहा था तो उसे बाढ़ के विचित्र दृश्य का अनुभव हुआ। लेखक ने देखा कि गाँधी मैदान की रैलिंग के सहारे लोग इस तरह खड़े हैं; जैसे—रामलीला का 'रामरथ' वहाँ से गुज़रने वाला हो। चारों ओर बाढ़ का पानी गेरुए रंग-का दिखाई पड़ रहा था। हरियाली का नामोनिशान मिट चुका था। रेडियो और जनसम्पर्क विभाग की गाड़ियाँ लोगों को चीख-चीखकर सावधान कर रही थीं।

स्त्री-पुरुषों, बच्चों, बूढ़े-जवानों की भीड़ मोटर, स्कूटर, ट्रैक्टर, मोटरसाइकिल, ट्रक, टमटम, साइकिल, रिक्शा और पैदल बाढ़ का पानी देखने जा रही थी और कुछ भीड़ पानी देखकर लौट रही थी। देखने वालों की आँखों, जुबान पर एक ही जिज्ञासा थी—"पानी कहाँ तक आ गया है?" श्री कृष्णापुरी, पाटलिपुत्र कॉलोनी, बोरिंग रोड, इंडस्ट्रियल एरिया का कहीं पता नहीं। सभी की एक ही आवाज थी—आ रहा है। आ गया। डूब गया। बह गया। सड़क के एक किनारे एक मोटी डोरी की शक्ल में गेरुआ-झाग-फेन में उलझा पानी तेजी से सरकता आ रहा था। मैंने कहा—आगे मत जाओ। वो देखिए—आ रहा है—मृत्यु का तरल दूत।

अंतक के मारे मेरे दोनों हाथ बरबस जुड़ गए। शाम के साढ़े सात बजे आकाशवाणी पर समाचार प्रसारित हो रहा था। हम सभी पान की दुकान के सामने खड़े चुपचाप सुन रहे थे। कलेजा धड़क उठा। दुकानदारों में हड़बड़ी मच गई और ऊँचे स्थानों पर सामान रखने लगे। खरीद-बिक्री सब बंद हो चुकी थी लेकिन पान वालों की बिक्री अचानक बढ़ गई, क्योंकि मन को तसल्ली देने के लिए वहाँ पान ही एकमात्र साधन था।

राजेन्द्र नगर चौराहे से कई पत्र-पत्रिकाएँ खरीदकर लेखक घर वापस लौट आया। मित्र से विदा लेते हुए कहा—"पता नहीं कल हम कितने पानी में रहें।" रात में भी लाउडस्पीकर लगी गाड़ियाँ सावधान कर रही थीं। समाचार दिल दहलाने वाला था। कलेजा धड़क उठा कि कहीं पटना डूब ही न जाए। गाड़ी ने फिर चेतावनी दी कि बाढ़ का पानी रात बारह बजे तक लोहानीपुर, कंकड़बाग, राजेन्द्र नगर को डुबाने वाला है। मैंने घर वाली से पूछा कि गैस का क्या हाल है। जवाब मिला—फिलहाल बहुत है।

सारा शहर जाग रहा था। लेखक सोने की कोशिश कर रहा था लेकिन नींद नहीं, उसने लिखने के लिए निश्चय किया शीर्षक-बाढ़ आकुल प्रतीक्षा। बार-बार पुरानी घटनाएँ याद आतीं। 1949 में महानंदा की बाढ़ में घिरे वापसी थाना के एक गाँव की याद। कई बीमारों को नाव पर चढ़ाकर कैंप में ले जाना था। एक बीमार नौजवान के साथ उसका कुत्ता भी कुँई-कुँई करता नाव पर चढ़ आया। डाक्टर साहब कुत्ते से भयभीत हो गए। चिल्लाए—कुक्कुर नहीं, कुक्कुर नहीं इसे भगाओ। बीमार नौजवान छप से पानी में उतर गया, बोला—"हमारा कुक्कुर नहीं जाएगा तो हम भी नहीं जाएगा।" फिर कुत्ता भी छपाक से पानी में गिरा—"हमारा आदमी नहीं जाएगा तो हम हूँ नहीं जाएगा।" इस प्रकार की अनेक घटनाएँ बार-बार याद आतीं।

ढाई बज गए लेकिन अभी तक बाढ़ का पानी नहीं आया, लेखक ने सोने की कोशिश की लेकिन नींद का नामोनिशान नहीं। वह फिर स्मृतियों में खो जाता है—ओह! इस बाढ़ ने तो उसकी नींद विदा कर दी। सुबह के साढ़े पाँच बज रहे थे। बाढ़ का पानी चढ़ आया था। चारों ओर शोर हो रहा था, पानी सब जगह अपना घर बना चुका था। अब लेखक सोचता है कि यदि उसके पास मूवी कैमरा या टेपरिकार्डर होता तो वह इस दृश्य को कैद कर लेता लेकिन उसके पास न तो कैमरा है न ही टेपरिकार्डर, वह सोचता है इस तरह पानी का आना कभी नहीं देखा। देखते-देखते गोलपार्क डूब गया। हरियाली का पता नहीं, चारों ओर पानी ही पानी। लेखक की कलम भी चोरी चली गई है। लेखक सोचता है अच्छा है मेरे पास कुछ भी नहीं।

शब्दार्थ

पनाह—शरण, **विभीषिका**—भयंकरता, **अविराम**—लगातार, **वृष्टि**—वर्षा, **अस्फुट**—स्पष्ट, **गोष्ठी**—सभा, **आकुल**—व्याकुल **उजले**—सफ़ेद, **रव**—शोर, **नैया**—नाव

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी बाढ़ के कारणों के स्थान पर उपाय बताने लगते हैं।
2. विद्यार्थी जल प्रलय की तीव्रता का वर्णन नहीं कर पाते।
3. शीर्षक की सार्थकता जैसे प्रश्नों को तर्क द्वारा स्पष्ट करना चाहिए।
4. पाठ का अध्ययन ध्यानपूर्वक करना चाहिए।

अध्याय — 2 मेरे संग की औरतें

—मृदुला गर्ग

पाठ का सारांश

लेखिका की माँ की शादी होने से पहले ही उसकी नानी की मृत्यु हो गई थी, इसलिए वह अपनी नानी को न देख सकी और न उनसे कहानी ही सुन सकी। बाद में नानी की कहानी सुनकर लेखिका को उनकी विशेषताओं का पता चला। लेखिका की नानी अनपढ़, परदा करने वाली औरत थीं, जिनके पति बैरिस्ट्री की डिग्री (विलायत से) प्राप्त थे और विलायती ढंग से जीवन जीते थे, पर नानी इन बातों से बेअसर थीं। उन्होंने अपनी इच्छा का इज़हार पति से कभी नहीं किया। मृत्यु को निकट जानकर वह लेखिका की माँ की शादी की सोचकर मुँहजोर हो उठीं और उन्होंने अपने पति के मित्र स्वतन्त्रता सेनानी प्यारेलाल शर्मा को बुलाकर कहा कि उनकी बेटी के लिए वर वे ऐसा तय करें जो आज़ादी का सिपाही हो। इससे लेखिका को उनके आजादी के जुनून और आज़ाद ख्याली का पता चला। वे अपनी ज़िन्दगी अपने ढंग से जीती रहीं।

नानी की इच्छानुसार उसकी माँ की शादी एक पढ़े-लिखे होनहार परन्तु गरीब आज़ादी के सिपाही से हो गई। इस प्रकार वे सादा जीवन जीने को विवश थीं। दुबले-पतले शरीर वाली माँ रात में जागकर खादी की साड़ी पहनने का अभ्यास करतीं।

लेखिका कहती है माँ अपनी खूबसूरती, नज़ाकत, ईमानदारी और निष्पक्षता जैसे गुणों के कारण परीजाद से भी अधिक जादुई लगती थीं। काम करने को तो उनसे कोई नहीं कहता पर हर काम में उनकी राय लेकर उसका पालन अवश्य किया जाता था। लेखिका ने अपनी माँ को

भारतीय माँ जैसा नहीं पाया। अपनी बीमारी और अरुचि के कारण वे न घर के काम करती थीं और न बच्चों के खाने-खिलाने पर ध्यान देती थीं। बस बिस्तर पर लेटकर किताबें पढ़ा करती थीं या संगीत सुनती रहती थीं। परिवार के लोग उनमें श्रद्धा रखते थे, क्योंकि न वे झूठ बोलती थीं और न वे किसी की गोपनीय बात किसी दूसरे से कहती थीं। इस कारण उन्हें घर में आदर और बाहर वालों की दोस्ती मिली हुई थी। वे बच्चों की भी दोस्त थीं।

लेखिका की परदादी भी लीक से हटकर थीं। उन्होंने सामान को एकत्र नहीं किया। वे फालतू सामान को दान कर देती थीं। यहाँ तक तो बात ठीक थी, पर लोगों को तब आश्चर्य हुआ जब अपनी बहू के गर्भवती होने पर उन्होंने मन्दिर में भगवान से लड़की पैदा होने की मन्नत माँगी और यह बात सबको बता भी दी। उनके बार-बार मन्दिर में दुआ माँगने का असर यह हुआ कि भगवान भी अफरा-तफरी में आ गए और घर में पाँच कन्याएँ एक के बाद एक पैदा हुईं।

एक बार हवेली के मर्द बारात में किसी दूसरे गाँव गए और औरतें रतजगा मना रही थीं। इस शोर में एक चोर न जाने कब हवेली में घुस गया कोई जान न सका। शोर से बचकर लेखिका की परदादी दूसरे कमरे में सोने चली गईं थी। गलती से चोर भी उसी कमरे में घुस गया। उसके कदमों की आहट से उनकी नींद खुल गई। परदादी ने पूछा 'कौन'? चोर के यह बताने पर कि 'मैं चोर हूँ' उन्होंने उसे कुएँ से एक लोटा साफ़ पानी लाने को कहा। कुएँ पर पानी भरते चोर को पहरेदार ने पकड़ लिया।

लेखिका की परदादी ने आधा पानी खुद पीकर बाकी पानी चोर को पिलाकर कहा, 'एक लोटे से पानी पीकर हम माँ-बेटे हुए। अब तू चाहे चोरी कर या खेती'। चोर चोरी करना छोड़कर खेती करने लगा।

15 अगस्त, 1947 को आज़ादी मिलने का जब जश्न मनाया जा रहा था, तब लेखिका को टाइफाइड बुखार था। उसके लाख रोने पर भी उसे इंडिया गेट जश्न में नहीं जाने दिया गया। उसके पिता ने उसे 'ब्रदर्स कारामजोव' नामक उपन्यास दिया जिसे पढ़ते-पढ़ते वह रोना-धोना भूल गई।

अपनी परदादी की तरह ही लेखिका की चारों बहनें भी लीक से हटकर चलती रहीं। सबसे बड़ी बहन जिसका बाहर का नाम मंजुल और घर का नाम था रानी, ने शादी के बाद लिखना शुरू किया और अपना नाम मंजुल भगत रखा। दूसरे नम्बर पर स्वयं लेखिका थी जिसने स्वयं भी शादी के बाद मृदुला गर्ग नाम से लिखना शुरू किया। लेखिका और उसकी बहन को नाम बदल कर लिखने के कारण पोंगापंथी या घरघुस्सू जैसे शब्द भी सुनने पड़ते थे। लेखिका के बाद की दो बहनें रेणु और चित्रा लेखन से बची रहीं। सबसे छोटी बहन अचला अंग्रेज़ी में लेखन कार्य करने लगी और छोटा भाई राजीव हिन्दी में लेखन कार्य करने लगा।

लेखिका की छोटी बहन रेणु बी. ए. नहीं करना चाहती थी परन्तु पिताजी और घर वालों का मन रखने लिए जैसे-तैसे बी.ए. कर लिया। तीसरी बहन रेणु खुद कम, दूसरों को ज़्यादा पढ़ाती थी, इसलिए उसके अंक अच्छे नहीं आते थे। वह दृढ़ निश्चयी थी और एक लड़के को पसन्द कर अपनी शादी का ऐलान करके बाद में उससे शादी कर ली थी। सबसे छोटी अचला ने पत्रकारिता में प्रवेश लेकर पिताजी की पसन्द से शादी की और बाद में लेखन कार्य में संलग्न हो गई।

शादी के बाद लेखिका को बिहार के छोटे-से कस्बे में रहना पड़ा। वहाँ उसने स्त्री-पुरुषों को एक साथ नाटक करने के लिए तैयार किया और चार-पाँच साल में कई नाटक किए और अकाल राहत कोष के लिए धन एकत्र किया।

कर्नाटक जाने पर लेखिका ने छोटे से कस्बे में एक प्राइमरी स्कूल खोलने की कैथोलिक बिशप से प्रार्थना की पर क्रिश्चियन जनसंख्या कम होने के कारण उन्होंने स्कूल खोलने से मना कर दिया। तब लेखिका ने अनेक परिश्रमी लोगों की मदद से वहाँ अंग्रेज़ी, हिन्दी, कन्नड़ तीन भाषाएँ पढ़ाने वाला स्कूल खोल कर उसे कर्नाटक सरकार से मान्यता भी दिलवाई। इस प्रकार लेखिका के जिद्दीपन का पता चलता है। इतना सब कुछ करने के बाद भी उसे लगता है कि वह अपनी छोटी बहन रेणु बराबरी नहीं कर सकती है।

एक बार दिल्ली में भयंकर बारिश होने के बाद जगह-जगह पानी भर गया था। यातायात ठप था। रेणु को उसके स्कूल से जब कोई लेने नहीं आया तो सबके मना करने पर भी वह पैदल ही दो मील स्कूल गई और स्कूल बंद देखकर लौट आई। लेखिका सोचती है कि उस दिन का रोमांच कैसा रहा होगा। जगह-जगह पानी से लब-लब करते, सुनसान शहर में अकेले अपनी मंजिल की ओर बढ़ते जाना इस अकेलेपन का मजा कुछ और ही था।

शब्दार्थ

परदानशीं—परदा करने वाली। **मुँहज़ोर**—बहुत बोलने वाला। **फ़रमाबरदार**—आज्ञाकारी। **मुस्तैद**—तैयार, चुस्त, तत्पर। **फ़ज़्ल**—अनुग्रह, दया। **अपरिग्रह**—संग्रह न करना, किसी से कुछ ग्रहण न करना। **ब्रदर्स कारामजोव**— इसके लेखक प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार दास्तोवस्की है। **अकबकाया**—घबराया। **बदस्तूर**—नियम से। **मोहलत**—फुर्सत, अवकाश। **फ़ारिग**—कार्य से निवृत्त। **मिराक**—मानसिक रोग। **खरामा-खरामा**—धीरे-धीरे। **इसरार**—आग्रह। **माकूल**—मुनासिब, अच्छा। **आकांक्षा**—इच्छा। **जुनून**—पागलपन। **मर्दजात**—पुरुष जाति। **नाहक**—व्यर्थ। **रुतबा**—ओहदा, इज़्ज़त। **कुतर्क**—बुरे तर्क। **शगिर्द**—शिष्य। **कगार**—किनारा।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी लेखिका की परदादी द्वारा लड़की की मन्नत माँगने की वजह नहीं समझ पाते और अनुमान के आधार पर उत्तर देते हैं।
2. विद्यार्थी महिलाओं की स्थिति सुधारने सम्बन्धी सुझाव देने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
3. विद्यार्थी प्रश्नों को ठीक से पढ़े बिना जल्दबाजी में उत्तर देने का प्रयास करते हैं जो गलत है।
4. विद्यार्थियों को पाठ का अध्ययन ध्यानपूर्वक करना चाहिए जिससे प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट रूप से दे सकें।
5. विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर जल्दबाजी में नहीं देने चाहिए बल्कि सोच समझकर उत्तर अपनी भाषा में लिखने चाहिए।

अध्याय — 3 रीढ़ की हड्डी

— जगदीश चन्द्र माथुर

पाठ का सारांश

'रीढ़ की हड्डी' जगदीश चन्द्र माथुर द्वारा रचित एक विचारप्रधान एकांकी है, जिसमें समाज में नारी को उचित गरिमा प्राप्त न होने की समस्या का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। उमा बी. ए. पास एक समझदार एवं सच्चरित्र युवती है। उसका चेहरा आकर्षक है परन्तु आँखों पर चश्मा चढ़ा हुआ है। उसके पिता रामस्वरूप एवं माँ प्रेमा काफी व्यस्त हैं क्योंकि उमा को देखने लड़के वाले आ रहे हैं। लड़का शंकर बी. एससी. करने के बाद मेडिकल की पढ़ाई कर रहा है। जबकि उसके पिता गोपाल प्रसाद पेशे से वकील हैं।

रामस्वरूप अपने नौकर के साथ मिलकर तख्त लाते हैं और कमरे को ठीक तरह से सजाते हैं। तख्त पर दरी और उसके ऊपर चादर बिछाई जाती है। पत्नी प्रेमा रामस्वरूप से कहती है कि उमा मुँह फुलाए बैठी है तुम्हीं ने ज़्यादा पढ़ा-लिखाकर सिर चढ़ा रखा है। प्रेमा अपने पुराने ज़माने को अच्छा बताती है, जब लड़कियाँ कम पढ़ती-लिखती थीं। प्रेमा यह भी शिकायत करती है कि उमा पाउडर वगैरह भी नहीं लगा रही जबकि लड़के वाले आ रहे हैं। रामस्वरूप समझाते हैं कि कोई बात नहीं, जब लड़के वाले आ जाएँ तो पान लेकर उसे भेज देना। कमरे में सितार भी रख दिया जाता है क्योंकि लड़की के गीत-संगीत में प्रवीण होने का भी प्रदर्शन करना है। रामस्वरूप अपनी पत्नी प्रेमा को हिदायत देते हैं कि लड़के वालों को यह मत बता देना कि उमा बी. ए. पास है। वे लोग दकियानूसी विचार वाले हैं, इसलिए उन्हें यही बताया गया है कि लड़की मैट्रिक पास है। रामस्वरूप कहते हैं कि उमा को देखने स्वयं लड़का (शंकर) और उसके पिता (गोपाल प्रसाद) आ रहे हैं। यद्यपि गोपाल प्रसाद स्वयं वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, लड़का बी. एससी. करके मेडिकल कॉलेज में पढ़ता है, परन्तु वे लोग यह चाहते हैं कि लड़की ज़्यादा पढ़ी-लिखी न हो।

गोपाल प्रसाद और शंकर आते हैं। लड़की का पिता होने के कारण रामस्वरूप अत्यधिक विनम्रता दिखाते हुए उनका स्वागत करते हैं और स्वयं को उनका सेवक बताते हैं। रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बातों-बातों में अपने ज़माने की तारीफ़ करते हैं वे उस समय के लोगों के ताकतवर होने की प्रशंसा करते हैं। रामस्वरूप उस समय को रंगीन ज़माना कहते हैं।

गोपाल प्रसाद, कहते हैं कि अब 'बिजनेस' की बातचीत हो जाए। रामस्वरूप विवाह को 'बिजनेस' कहे जाने पर चौंक जाते हैं। इस बीच रामस्वरूप चाय-नाश्ता लाने के लिए अंदर चले जाते हैं। गोपाल प्रसाद अपने लड़के शंकर से कहते हैं कि आदमी भला है। हैसियत भी ठीक है, अब पता चले लड़की कैसी है? वे शंकर को हिदायत देते हैं कि तुम अपनी कमर सीधी रखो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि तुम्हारी 'बैकबोन' .....। चाय-नाश्ते की औपचारिकता चलती है। गोपाल प्रसाद कहते हैं कि सरकार को खूबसूरती पर टैक्स लगा देना चाहिए। यदि औरतों पर ही अपनी खूबसूरती के 'स्टैंडर्ड' के अनुसार टैक्स तय करने की बात छोड़ दी जाए तो वे खुशी-खुशी टैक्स दे देंगी। वे यह बताते हैं कि उनके लड़के के विवाह के लिए लड़की का खूबसूरत होना निहायत ज़रूरी है।

गोपाल प्रसाद रामस्वरूप से कहते हैं कि मेरे कानों में भनक पड़ी है कि आपकी लड़की ज़्यादा पढ़ी-लिखी है, ऐसा तो नहीं है ना? हमें ज़्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। मर्दों का तो काम ही है पढ़ना और योग्य बनना। यदि औरतें भी अंग्रेज़ी का अखबार पढ़ने लगीं और 'पॉलिटिक्स' पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी। रामस्वरूप भी उनकी इस बात का समर्थन करते हैं कि उच्च शिक्षा केवल पुरुषों के लिए है।

उमा तश्तरी में पान लेकर उन लोगों के सामने आती है। उसकी आँखों पर चश्मा देखकर बाप-बेटे चौंक उठते हैं। गोपाल प्रसाद संदेह प्रकट करते हैं कि कहीं यह अधिक पढ़ाई के कारण तो नहीं है। रामस्वरूप साफ़ इंकार कर देते हैं। गोपाल प्रसाद को उमा की चाल-ढाल और चेहरे की छवि पसंद आ जाती है। उमा सितार बजाती हुई मीरा का भजन गाती है। इसी बीच उसकी आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं। वह गाते-गाते अचानक रुक जाती है। उसके पिता रामस्वरूप पेंटिंग, सिलाई-कढ़ाई आदि में उसकी निपुणता के बारे में बताते हैं।

गोपाल प्रसाद, उमा से पूछते हैं कि क्या तुमने कुछ इनाम भी जीते हैं ? उमा चुप रहती है। रामस्वरूप ज़्यादा जोर डालते हैं तो वह दृढ़ स्वर में कहने लगती है कि मैं क्या कहूँ ? लड़की को तो कुर्सी-मेज की तरह खरीदार को दिखा दिया जाता है। उसकी इच्छा-अनिच्छा के बारे में तो कुछ पूछा ही नहीं जाता। क्या लड़कियों के दिल नहीं होता ? उनके हृदय को ठेस नहीं पहुँचती ? लड़कों के बारे में क्यों नहीं कुछ पूछा जाता? यह साहबजादे (शंकर) लड़कियों के हॉस्टल के आस-पास घूमते पाए गए थे। नौकरानी के पैर पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे। मैंने बी. ए. पास किया है तो कोई पाप नहीं किया। मुझे अपनी इज्ज़त, अपने मान का ख्याल है।

गोपाल प्रसाद क्रोधित हो जाते हैं और रामस्वरूप से कहते हैं कि आपने मेरे साथ धोखा किया है। बी. ए. पास लड़की को मैट्रिक तक पढ़ी बताया, मैं चलता हूँ। दोनों बाप-बेटे दरवाज़े की ओर बढ़ते हैं। उमा कहती है कि घर जाकर पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं—यानी बैकबोन! गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी भरा क्रोध है और उनके लड़के के चेहरे पर रुआंसापन। दोनों बाहर चले जाते हैं।

शब्दार्थ

पसीना बहाना —परिश्रम करना। **गंदुमी रंग**—गेहुँआ रंग। **जंजाल**—मुसीबत, झंझट फसाँव। **मुँह फुलाना**—नाराज़ होना। **लच्छन**—स्वभाव, चिह्न। **ठिठोली**—मज़ाक, हँसी। **तालीम**—क्षिक्षा, पढ़ाई-लिखाई। **फ़ितरती**—चतुर। **तशरीफ़ रखिए**—बैठिए। **तकलीफ़**—परेशानी। **काँटों से घसीटना**—मुसीबत में डालना। **मुखातिब**—सामने मुख करके। **मार्जिन**—गुंजाइश। **तकल्लुफ़**—बनावट, संकोच। **जायचा**—जन्म-पत्री। **अर्ज़**—निवेदन, प्रार्थना। **अधीर**—व्याकुल, परेशान। **बेबस**—मज़बूर। **सहसा**—अचानक।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी उमा की शिक्षा छिपाने के लिए केवल गोपालप्रसाद को दोषी मानते हैं जो कि गलत है।
2. विद्यार्थी महिलाओं को उचित स्थान दिलाने हेतु किए जा सकने वाले प्रयासों का बताने में असमर्थ रहते हैं।
3. शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करने में उन्हें कठिनाई का अनुभव होता है।
4. विद्यार्थियों को पाठ का अध्ययन ध्यानपूर्वक करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को पात्रों के परिचय के बारे में जानकारी हो सके।
5. शीर्षक की सार्थकता जैसे प्रश्नों को तर्क द्वारा स्पष्ट करना चाहिए।
6. पाठ में पात्रों की स्थिति, भावना आदि का अध्ययन करके ही प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए।

लेखन-खण्ड

अध्याय — 1 अनुच्छेद-लेखन

स्मरणीय बिन्दु

अनुच्छेद-लेखन एक कला है। किसी विषय से सम्बन्धित सभी महत्त्वपूर्ण बातों को निर्धारित शब्द सीमा में लिखने के लिए बड़े बुद्धि-कौशल की आवश्यकता होती है। अनुच्छेद-लेखन के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी आवश्यक हैं—

(1) अनुच्छेद-लेखन एक प्रकार की संक्षिप्त लेखन-शैली है, अत: इसमें मुख्य विषय पर ही ध्यान केन्द्रित रहना चाहिए।

(2) अनुच्छेद-लेखन में उदाहरण अथवा दृष्टांत के लिए कोई स्थान नहीं है। आवश्यकता होने पर उसकी ओर संकेत कर देना ही पर्याप्त है।

(3) अनुच्छेद में व्यर्थ की बातें उसके अपेक्षित प्रभाव को शिथिल बनाती हैं।

(4) अनुच्छेद के सभी वाक्यों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिए।

(5) अनुच्छेद में इस बात की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि उसका प्रथम और अन्तिम वाक्य अर्थगर्भित तथा प्रभावोत्पादक हो।

(6) प्रथम वाक्य की विशिष्टता इसमें है कि वह अनुच्छेद के सम्बन्ध में पाठक का कौतूहल जागृत करने में किस सीमा तक समर्थ है। अन्तिम वाक्य की विशिष्टता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि पाठक की जिज्ञासा किस सीमा तक शांत हुई है।

(7) अनुच्छेद में भाषा की शुद्धता तथा शब्दों के चयन पर विशेष रूप से ध्यान देना अपेक्षित है। मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग अनुच्छेद को शक्ति प्रदान करता है तथा भावाभिव्यक्ति को प्रभावशाली कर देता है।

(8) अनुच्छेद-लेखन में अनुभूति की प्रधानता अपेक्षित है।

(9) अनुच्छेद-लेखन में परीक्षार्थी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपनी बात को उतने ही शब्दों में बाँधने का प्रयत्न करे जितने शब्द प्रश्न-पत्र में कहे गए हैं। दो-चार शब्द कम-अधिक होना आपत्तिजनक नहीं होता।

(10) सामान्यत: 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखा जाता है।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अनुच्छेद हेतु दिए गए विषयों का चुनाव विद्यार्थी अपनी लेखन और ज्ञान क्षमता के अनुसार नहीं करते हैं।
2. अनुच्छेद के विषय में विद्यार्थी संकेत बिन्दु को देखे बिना ही अनुच्छेद लिख देते हैं तथा शब्द-सीमा का भी ध्यान नहीं रखते।
3. विद्यार्थियों को विषय का चुनाव अपने लेखन और ज्ञान-क्षमता के आधार पर करना चाहिए।
4. विषय में संकेत-बिन्दु को ध्यानपूर्वक पढ़कर अनुच्छेद लिखना चाहिए और समय सीमा का ध्यान रखना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को वर्तनी की शुद्धता पर भी ध्यान देना चाहिए तथा अनुच्छेद लिखने के बाद एक बार पढ़ना भी चाहिए जिससे वर्तनीय तथा भाषागत त्रुटियों को दूर किया जा सके।

अध्याय — 2 पत्र-लेखन

स्मरणीय बिन्दु

पत्र-लेखन एक अत्यन्त प्राचीन कला है। मनुष्य के पठन-पाठन के साथ ही इस कला का प्रारम्भ हुआ था। पत्र एक संदेशवाहक दूत के समान होता है जो हमारे संदेश को दूर बैठे परिचितों-अपरिचितों तक पहुँचाता है। इसके माध्यम से मन की बात लिखकर विस्तार से प्रकट की जा सकती है। पत्र को अगर 'मन का आईना' कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, इसलिए आज के कम्प्यूटर और इंटरनेट के युग में पत्र का हमारे जीवन में एक विशेष महत्त्व है। यद्यपि मोबाइल के चलन में आने से पत्र लेखन में कुछ कमी आयी है फिर भी पत्रों की हमें आवश्यकता पड़ती ही है।

अच्छे पत्र की विशेषताएँ—

(1) पत्र में संक्षिप्तता, क्रमबद्धता तथा प्रभावान्विति हो।

(2) पत्र की भाषा शैली सरल हो।

(3) पत्र में विनम्रता एवं आकर्षण हो।

पत्रों के प्रकार—पत्रों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है—

(1) **अनौपचारिक अथवा पारिवारिक पत्र**—इसके अन्तर्गत परिवार के सदस्यों, मित्रों व निकट सम्बन्धियों को लिखे जाने वाले पत्र आते हैं।

(2) **औपचारिक पत्र**—इसके अन्तर्गत आवेदन पत्र, कार्यालयी पत्र, संपादकीय पत्र, प्रार्थना पत्र तथा व्यावसायिक पत्र आते हैं।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. विद्यार्थियों को पत्र के विषय को भली-भाँति समझकर ही लिखना चाहिए। अधिकांश छात्र संबोधन के पश्चात् अभिवादन नहीं लिखते हैं।
2. अधिकांश विद्यार्थी पत्र में सविनय, निवेदन आदि विनम्रता सूचक शब्दों का प्रयोग नहीं करते हैं तथा प्रारूप संबंधी अशुद्धियाँ भी अधिक करते हैं।
3. कुछ विद्यार्थी भवदीय के स्थान पर 'आपका भवदीय' या 'आपका आज्ञाकारी' भी लिखकर त्रुटियाँ करते हैं। वर्तनी की भी अशुद्धियाँ अधिक रूप से करते हैं।
4. पत्र में अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग किया जाता है तथा प्रारूप में छात्रों द्वारा कई बातें बाईं ओर लिखी जाती हैं जो कि उचित नहीं है। पत्र में विद्यार्थी अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग करते हैं, जैसे—डेट, डे, थैंक्स आदि।
5. पत्र के प्रारूप में सभी बातें बाईं ओर लिखनी चाहिए।
6. पत्र की भाषा सरल व सहज होनी चाहिए।
7. पत्र में व्यर्थ की बातों का समावेश नहीं करना चाहिए।
8. पत्र में अंग्रेज़ी शब्दों के पयोग से बचना चाहिए।

अध्याय — 3 लघु कथा लेखन

स्मरणीय बिन्दु

कहानी हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग है। हम सभी परस्पर एक दूसरे को अपनी कहानी किसी न किसी रूप में सुनाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में कहानी लिखने का मूल भाव व्याप्त होता है। कहानी हिंदी में गद्य लेखन की एक विधा है। कहानी लिखते समय हमें निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(1) कहानी की शुरुआत अच्छी होनी चाहिए।
(2) कहानी के वाक्य ना तो बहुत छोटे और ना ही बहुत बड़े होने चाहिए।
(3) कहानी की भाषा शैली सरल व प्रवाहमयी में होनी चाहिए।
(4) कहानी का शीर्षक आकर्षक व रोचक होना चाहिए।
(5) कहानी के अंत में पाठक को कोई शिक्षा या उपदेश दिया जाना चाहिए।
(6) कहानी में कसाव होना चाहिए।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश छात्र कथा-लेखन की विधा से अपरिचित से जान पड़ते हैं।
2. छात्र लंबे-लंबे वाक्यों का प्रयोग करते हैं जिससे कथ्य दुरुह हो जाता है।
3. कुछ छात्र विषय से भटक जाते हैं और व्यर्थ की बातों को लिखने लगते हैं।
4. कथा लेखन का कक्षा में अभ्यास करना चाहिए।
5. कथा लेखन के समय अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करना चाहिए।
6. कथा में दोहराव नहीं होना चाहिए तथा उसमें तारतम्यता होनी चाहिए।
7. कहानी सुगठित व सुव्यवस्थित होनी चाहिए।

अध्याय — 4 ई-मेल लेखन

प्रस्तावना

ई-मेल या इलेक्ट्रॉनिक मेल, इन्टरनेट के माध्यम से, पत्र भेजने का एक तरीका है। मेल शब्द का अर्थ होता है संदेश, अर्थात् इससे हम यह समझ सकते हैं कि यह एक प्रकार की चिट्ठी या संदेश होता है, जब इस संदेश या चिट्ठी को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से भेजा जाता है तो उसे ई-मेल (e-mail) कहते हैं। ई-मेल के द्वारा हम विश्व के किसी भी कोने में में बैठे इंसान तक सिर्फ़ कुछ सेकण्ड में ही अपना संदेश भेज सकते हैं और अन्य इंसान द्वारा भेजा संदेश इलेक्ट्रॉनिक रूप में पा सकते हैं।

ई-मेल के साथ हम अन्य फाइलें जैसे—फोटो या डॉक्युमेन्ट्स भी जोड़कर भेज सकते हैं।

अध्याय — 5 संवाद-लेखन

स्मरणीय बिन्दु

संवाद लेखन भी एक कला है। संवाद कुशलता का जीवन में बहुत महत्त्व है। जब दो व्यक्ति किसी भी विषय पर बातचीत करते हैं तो उस बातचीत को ही संवाद कहते हैं और जब उस बातचीत को लिखित रूप दिया जाता है तो उसे संवाद लेखन कहते हैं।

संवाद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. संवादों की भाषा सरल तथा भावानुकूल हो।
2. संवाद विषय तथा पात्र के अनुकूल हो।
3. वाक्य छोटे, रोचक और प्रभावपूर्ण होने चाहिए।
4. संवादों के वाक्य संक्षिप्त होने चाहिए।
5. संवाद परिस्थितियों के अनुकूल होने चाहिए।
6. संवादों में हास्य-व्यंग्य का पुट भी रहना चाहिए।

सामान्य त्रुटियाँ एवं निवारण

1. अधिकांश विद्यार्थी संवाद लेखन को कहानी लेखन की तरह लिखते हैं जो गलत है तथा विद्यार्थी संवाद घटना, परिस्थिति व पात्रानुकूल नहीं होते।
2. विद्यार्थी लिखते समय विराम-चिह्नों का यथास्थान प्रयोग नहीं करते।
3. विद्यार्थी को संवाद लेखन का कक्षा में पर्याप्त अभ्यास करना चाहिए।
4. हमेशा संवाद देश-काल व पात्रानुकूल होने चाहिए तथा संवाद लेखन में शिष्ट भाषा का पयोग करना चाहिए। संवाद स्वाभाविक होने चाहिए न कि बनावटी।

अध्याय — 6 सूचना-लेखन

स्मरणीय बिन्दु

कोई भी सूचना या तो मौखिक रूप से दी जाती है या फिर लिखित रूप से। रेडियो, टेलीविज़न आदि के माध्यम से मौखिक सूचना दी जाती है। जबकि लिखित रूप से सूचना देने को सूचना-लेखन कहा जाता है। सूचना-लेखन के माध्यम से व्याकरणिक रूप से शुद्ध हिंदी लेखन की कला विकसित होती है और अपने विचारों को संक्षिप्त रूप से स्पष्ट अभिव्यक्ति देने की क्षमता का भी आंकलन होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कम शब्दों में औपचारिक शैली में लिखी गई संक्षिप्त जानकारी को सूचना कहते हैं अर्थात् दिनांक और स्थान के साथ भविष्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों आदि के बारे में दी गई लिखित जानकारी सूचना कहलाती है। किसी सूचना विशेष को सार्वजनिक करना सूचना लेखन कहलाता है। इसके अन्तर्गत किसी सभा, बैठक, गोष्ठी, कार्यशाला, नामादि परिवर्तन अथवा अन्य विनिमय का विवरण आता है।

❑❑